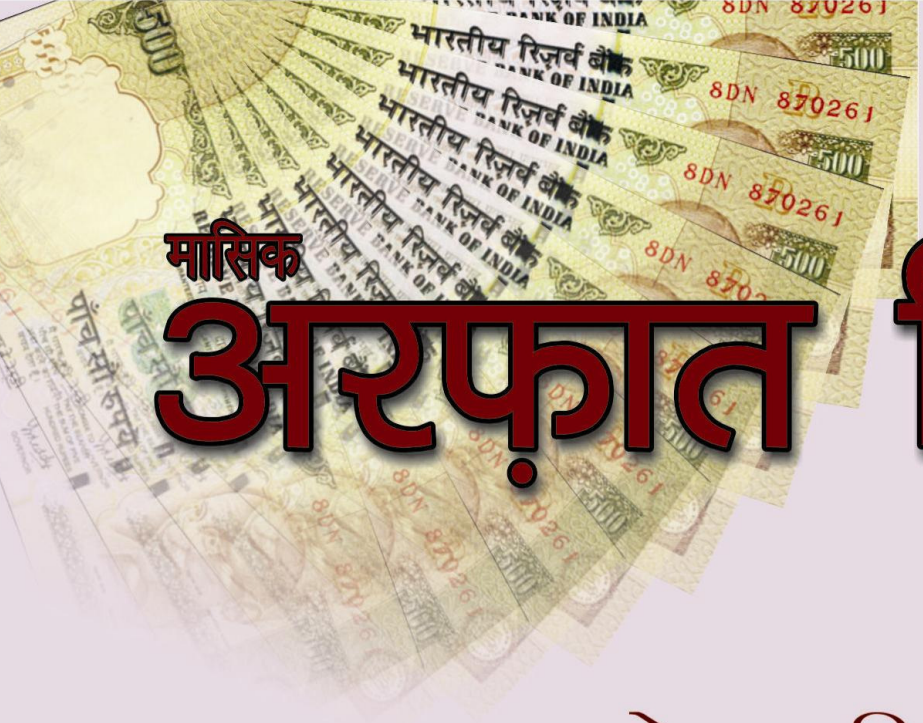

मासिक

अरफ़ात किरण

रायबरेली

ब्याज से सामूहिक हानि

कुरआन कहता है कि: "अल्लाह ने व्यापार को जायज़ किया है और ब्याज को हराम किया है।" इसका कारण यह है कि ब्याज के द्वारा समस्त जनसमूह का धन कुछ लोगों के पास एकत्र हो जाता है। जिससे जनसमूह को अत्यधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है और व्यक्ति (चाहे वे अपनी संस्था, कम्पनी या समूह बना लें) क़ारून बन जाते हैं। पूंजीपतियों और धनवानों की थोड़ी सी दौलत जिससे वे ब्याज का कारोबार आरम्भ कर देते हैं, सम्पूर्ण जनसमूह और सारे शहर या देश के व्यक्तिगत धन को इस प्रकार खींच लेते हैं जिस तरह अलिफ़ लैला का चुम्बकीय पहाड़ जहाज़ों और नावों के कब्ज़ों व कीलों को खींचकर उनके तख़्तों और यात्रियों को डूबने के लिये छोड़ दिया करता था। वे उनके आर्थिक साधनों और उनके समय और शक्ति पर क़ब्ज़ा करते हैं और बिना किसी मेहनत और सही बदले के रुपयों से रुपया पैदा करते हैं और इस तरह उनका रुपया फिरने और फैलने के बजाय एक जगह फूलता रहता है।

हज़रत मौलाना सैयद अबुल हसन अली हसनी नदवी (रह0)

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल नदवी
दारे अरफ़ात, तकिया कलां, रायबरेली

DEC 16

₹10/-

मानवता का गौरव (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)

"दुनिया के हर इनसान को गर्व करना चाहिये कि इनसानों में एक ऐसा इनसान पैदा हुआ जिससे इनसानियत का सर ऊंचा और नाम रोशन हुआ। अगर आप (स०अ०) न आते तो दुनिया का नक़्शा क्या होता, और हम इनसानियत की शराफ़त व अज़मत के लिये किसको पेश करते? मुहम्मद (स०अ०) हर इनसान के हैं, मुहम्मद (स०अ०) से इस दुनिया की रौनक और इनसानों की अज़मत हैं, वे किसी क़ौम की मिल्कियत नहीं, उन पर किसी मुल्क का दावा नहीं, वे पूरी मानवता के लिये गौरव हैं, क्यों आज किसी देश का इनसान ख़ुशी के साथ यह नहीं कहता कि मेरा उस प्रजाति से संबंध है जिसमें मुहम्मद (स०अ०) जैसा इनसान पैदा हुआ।

आज इनसानों का कौन सा वर्ग है जिस पर आप (स०अ०) प्रत्यक्ष या परोक्ष कोई एहसान नहीं? क्या मर्दों पर आप (स०अ०) का एहसान नहीं कि आप (स०अ०) ने उनको मर्दानगी और आदमियत की तालीम दी? क्या औरतों पर आप (स०अ०) का एहसान नहीं कि आप (स०अ०) ने उनके अधिकार बताए, और उनके लिये हिदायतें और वसीयतें की, आप (स०अ०) ने कहा कि "जन्नत मांओ के क़दमों के नीचे है" क्या कमज़ोर पर आपका एहसान नहीं कि आप (स०अ०) ने उनकी हिमायत की? और कहा कि "मज़लूम की बद्दुआ से डरो कि उसके और ख़ुदा के बीच कोई पर्दा नहीं", ख़ुदा कहता है कि "मैं टूटे हुए दिलों के साथ हूं" क्या ताक़तवर और हुकमरानों पर आप (स०अ०) का एहसान नहीं कि आप (स०अ०) ने उनके अधिकार व कर्तव्य भी बताए और उनकी हदें भी बतायीं, और इन्साफ़ करने वालों और ख़ुदा से डरने वालों को बशारत सुनायी कि इन्साफ़ करने वाला बादशाह रहमत के साये में होगा? क्या व्यापारियों पर आप (स०अ०) का एहसान नहीं कि आप (स०अ०) ने तिजारत की फ़ज़ीलत और उस पेशे की शराफ़त बतायी है, और ख़ुद तिजारत करके उस गिरोह की इज़्ज़त बढ़ाई। क्या आप (स०अ०) ने यह नहीं कहा कि "मैं और रास्त गुफ़्तार और ईमानदार ताजिर जन्नत में करीब-क़रीब होंगे"? क्या आप (स०अ०) का मज़दूरों पर एहसान नहीं? कि आप (स०अ०) ने ताकीद की थी कि "मज़दूरों को मज़दूरी पसीना सूखने से पहले दे दो" क्या जानवरों तक पर आप (स०अ०) का एहसान नहीं? कि आप (स०अ०) ने कहा कि "हर वह प्राणी जो जिगर रखता है और जिसमें एहसास व ज़िन्दगी है, उसको आराम पहुंचाना और खिलाना-पिलाना भी सदक़ा है।" क्या सारी इनसानी बिरादरी पर आप (स०अ०) का एहसान नहीं? कि रातों को उठ-उठ कर आप (स०अ०) शहादत देते थे कि "ख़ुदाया तेरे सब बन्दे भाई-भाई हैं" क्या सारी दुनिया पर आप (स०अ०) का एहसान नहीं? कि सबसे पहले दुनिया ने आप (स०अ०) की ज़बान से सुना कि ख़ुदा किसी मुल्क, क़ौम, नस्ल व बिरादरी का नहीं, सारे जहानों और दुनिया के सब इनसानों का है। जिस दुनिया में आर्यों का ख़ुदा, यहूदियों का ख़ुदा, मिस्रियों का ख़ुदा, ईरानियों का ख़ुदा, कहा जाता था वहां "सभी तारीफ़ उस रब की जो सारे आलम का रब है" की हक़ीक़त का ऐलान हुआ, और उसको नमाज़ का हिस्सा बना दिया गया।

हमारी आपकी दुनिया में हकीम व फ़लसफ़ी भी आए, अदीब व शायर भी, फ़तेह करने वाले और किश्वरकुशा भी, राजनीतिज्ञ और क़ौमी रहनुमा भी, साइन्टिस्ट भी, मगर किसके आने से दुनिया में वह बहार आयी जो पैग़म्बर के आने से, फिर सबसे आख़िरी सबसे बड़े पैग़म्बर मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह (स०अ०) के आने से आयी? कौन अपने साथ हरियाली, बरकतें, वह रहमतें, इनसानों के लिये वह दौलतें और इनसानियत के लिये वह नेमतें लेकर आया जो मुहम्मद स०अ लेकर आए?!!"

हज़रत मौलाना सैयद अबुल हसन अली हसनी नदवी (रह०)

بسم اللہ الرحمن الرحیم

मासिक

अरफ़ात किरण

रायबरेली

अंक:१२ दिसम्बर २०१६ ई० वर्ष:८

संरक्षक: हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी (अध्यक्ष - दारे अरफ़ात)

निरीक्षक
मौ० वाज़ेह रशीद हसनी नदवी
जनरल सेकेरेट्री- दारे अरफ़ात

सह सम्पादक
मौ० नफ़ीस ख़ॉ नदवी

सम्पादकीय मण्डल
मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी
अब्दुस्सुबहान नारवुदा नदवी
महमूद हसन हसनी नदवी

मुदक
मौ० हसन नदवी

अनुवादक
मोहम्मद सैफ़

E-Mail: markazulimam@gmail.com www.abulhasanalinadwi.org

इस अंक में:

पड़े सोते हैं बेख़बर अहले कश्ती.....२
बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

बराबरी की शिक्षा.....३
हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

सबसे बड़े एहसान की मांग.....५
मौलाना अब्दुल्लाह हसनी नदवी रह०

भीख मांगना उम्मत के माथे पर एक बदनुमा दाग़.....७
मौलाना ख़ालिद सैफ़ुल्लाह रहमानी

तौहीद क्या है.....८
बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

सफ़बन्दी के कुछ मसले १०
मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी

कल की दौलत आज की मुसीबत.....१३
जनाब शकंर अय्यर

पश्चिमी अश्लीलता का दौर.....१५
मौलाना यहया नोमानी

नोटबंदी का दूसरा पक्ष.....१७

साम्यवाद और इस्लाम.....१८
डॉक्टर मुहम्मद मुस्तफ़ा अस्सबाई रह०

शफ़ाअत–ए–रसूल स०अ०.....२०
मुहम्मद अरमुग़ान बदायूंनी नदवी

सम्पादक:बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल–नदवी दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली,यू०पी०.229001

प्रति अंक 10रू

मो० हसन नदवी ने एस० ए० आफसेट प्रिन्टर्स, मस्जिद के पीछे, फाटक अब्दुल्ला ख़ॉ, सब्ज़ी मण्डी, स्टेशन रोड रायबरेली से छपवाकर आफिस अरफ़ात किरण,मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल–नदवी, दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली से प्रकाशित किया।

वार्षिक 100रू50

सम्पादकीय

पड़े सोते हैं बेख़बर अहले कश्ती

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

इनसानी दुनिया इस वक़्त शर्मसार है। विभिन्न देशों में और खुद हमारे देश में जो हालात पेश आ रहे हैं, उसमें बहुत हद तक ख़ुदग़र्ज़ी और स्वयं के लाभ, करप्शन की शक्ल में सामने आ रहा है। व्यक्तिगत और सामूहिक लाभ के लिये देश एवं देशवासियों के लाभ को दांव पर लगा देना छोटी सी बात है। और हक़ीक़त यह है कि यह सामूहिक लाभ भी व्यक्तिगत लाभ से जुड़े होते हैं। पूरी दुनिया आज इसी शिकंजे में जकड़े नज़र आते हैं। और अगर तह तक पहुंचने की कोशिश की जाए तो उसकी जड़ें यहूदियों से जा मिलती हैं। जिस क़ौम का मक़सद ही इनसानों को अपना ग़ुलाम बनाना हो, और उसके लिये वह हर प्रकार के हथकंडे अपना सकती हो, उससे क्या उम्मीद की जा सकती है। इतिहास का अध्ययन करने वाले जानते हैं कि अलग–अलग देशों में इस क़ौम के ज़रिये से किस तरह तबाही हुई। अफ़सोस की बात यह है कि हमारा यह देश जो फ़ासीवादी ताक़तो को तोड़ने के लिये हरदम खड़ा रहा है और जो शुरू से मज़लूम, कमज़ोर और निहत्थे फ़िलिस्तीनियों का साथ देता रहा है वह आज ज़ालिमों के साथ दोस्तों की लाइन में खड़ा है। यह यहूदी क़ौम जो न अपनों की हुई न परायों की, और जिसने हमेशा दोस्ती करके अपना मक़सद हासिल करने के लिये पंजे गड़ाए हैं, वह हमारे इस देश पर अपना वर्चस्व चाहती है। इससे ज़्यादा अफ़सोस की बात यह है कि इसका एहसास किसी को नहीं।

पड़े सोते हैं बेख़बर अहले कश्ती

किसी को अन्दाज़ा नहीं कि आगे हालात क्या होने वाले हैं और पूरा देश किस प्रकार ख़तरे के रास्ते पर चल रहा है। देश की आज़ादी में हिन्दुओं और मुसलमानों ने मिलकर क़ुर्बानी दी। अब इसको बाक़ी रखने के लिये सबसे बढ़कर ज़िम्मेदारी उन्हीं के कन्धों पर आती है।

पयाम–ए–इनसानियत नामक आंदोलन के ध्वजवाहक इस्लामी चिन्तक हज़रत मौलाना सैयद अबुल हसन अली हसनी नदवी (रह0) फ़रमाते थे कि इस देश की बुनियाद तीन बातों पर रखी गयी हैं:

1– धर्मनिरपेक्षता

2– लोकतन्त्र

3– अहिंसा

यह बुनियादें अगर कमज़ोर हो गयीं तो देश कमज़ोर होगा।

आज अफ़सोस की बात यह है कि यह तीनों बुनियादें हिल गयी हैं। धार्मिक नफ़रत बढ़ती जा रही है, शायद जिसकी सबसे बड़ी वजह ग़लत फ़हमियां हैं जो बजाए दूर करने के बढ़ाई जा रही हैं और इतिहास में ऐसी चीज़ें शामिल की जा रही हैं जो हालात को असामान्य करने के लिये पर्याप्त हैं।

इस प्रकार लोकतन्त्र भी एक मज़ाक़ बनता जा रहा है। निरंकुश फ़ैसलों ने आम लोगों की जान निकाल ली है, और स्पष्ट है कि इन दोनों का नतीजा हिंसा के रूप में ही प्रकट होता है।

इस समय देश की सबसे बड़ी आवश्यकता यह है कि उन बुनियादों को मज़बूत किया जाए। हालात नार्मल करने का प्रयास किया जाए। यहां के रहने वालों में विश्वास की बहाली की जाए ताकि बजाए आपस में झगड़ने के और इस प्रकार से योग्यताएं नष्ट करने के यह एनर्जी देश के लिये इस्तेमाल हो, इससे देश उन्नति करे, इनसानियत फले–फूले, और इनसानियत का बाग़ लहलहाए और एक इनसान को ज़िन्दगी का मज़ा आए।

बराबरी की शिक्षा

हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

अलकुरआनः "ऐ लोगो! हमने तुमको एक मर्द और एक औरत से पैदा किया, और तुमको जमाअतों और क़बीलों में बांट दिया ताकि तुम एक–दूसरे को पहचान सको। अल्लाह की नज़र में तुममें सबसे ज़्यादा इज़्ज़तवाला वह है जो तुममें एहतियात की ज़िन्दगी गुज़ारता हो, अल्लाह तआला ख़ूब जानता है और हर चीज़ की ख़बर रखता है।" (सूरह हुजुरातः 13)

इस्लाम और ईमान सिर्फ़ इबादत का नाम नहीं बल्कि ज़िन्दगी को अल्लाह तआला की मर्ज़ी के मुताबिक़ ढाल लेने का नाम है। ईमान लाने के बाद एक मोमिन दूसरे मोमिन का भाई बन जाता है। इस तरह सभी ईमानवाले एक परिवार की तरह हो जाते हैं, जिसको ईमानी परिवार कहा जा सकता है। यह ईमानी परिवार नस्ली–खानदानी परिवारों पर वरीयता रखता है, क्योंकि इस परिवार से संबंध रखने वालों में लड़ाई–झगड़े की कोई संभावना नहीं होती। जबकि नस्ली परिवार और क़बीले इससे सुरक्षित नहीं। उनके बीच कभी क़बीले के आधार पर, कभी नस्ल के आधार पर, कभी ज़बान के आधार पर, कभी वंश के आधार पर अलग–अलग जत्थे बन जाते हैं, जिसके कारण आपसी कशमकश, लड़ाइयां और ज़्यादतियां होती हैं। उनमें ताक़तवर कमज़ोर को दबाता है, अधिक साधन रखने वाला कम साधन रखने वाले का हक़ मारता है। इस बिगाड़ का कारण यही होता है कि लोग अलग–अलग टुकड़ों में बंट कर एक–दूसरे से पक्षपात करते हैं। गोरा काले को कमतर समझता है, ओहदे वाला बिना ओहदे वाले को कम समझता है, जिस ख़ानदान में बड़ी शख़्सियतें हुई हों वह कम शख़्सियत वाले पर अपने को बरतर समझता है।

सूरह हुजुरात की इन आयतों में इन्हीं बातों की ताकीद करते हुए फ़रमाया गया कि सभी इनसान एक मां और एक बाप की औलाद हैं इनमें से किसी को किसी पर कोई वरीयता नहीं प्राप्त है। लोगों ने वरीयता के जो रूप बना लिये हैं वे बिल्कुल ग़लत हैं। समाज से उन चीज़ों को मिटाया जाना चाहिये। हमारे ईमान की मांग भी यही है कि हम इन चीज़ों से दूर रहें जो आपस में इख़्तिलाफ़ और टकराव का कारण बनती हो। यह जब ही संभव है जब हम ईमान की सभी मांगों को ध्यान में रखें। अल्लाह तआला की इताअत का जज़्बा दिलों में पैदा हो और उसके बाद बन्दों के हक़ को अदा करने के बारे में जो आदेश दिये गये हैं वे भी हमारे ध्यान में हों। किसी की चुग़ली, कमी, टीका–टिप्पणी से हम दूर हों। हम हर समय अपनी चिन्ता करें। अपनी आख़िरत की ज़िन्दगी अच्छी बनाने की चिन्ता करें। दूसरो की कमियों को तलाश करने के बजाए अपने ऐबों को तलाश करें। यह यक़ीन रखें कि इस दुनिया में अच्छे काम करने के बावजूद, आपस में लड़ाई–झगड़ा, चुग़ली इत्यादि नहीं छोड़ेंगे तो कल कयामत में इन सभी चीज़ों का हिसाब अपनी नेकियों से अदा करना होगा और हम अच्छे काम करने के बावजूद ख़ाली हाथ हो जाएंगे। इसी तरह अपने आप को किसी से बड़ा न समझें, क्योंकि आम तौर पर किसी की बुराई, या टीका–टिप्पणी या उसको बुरे नाम से उसी वक़्त पुकारा जाता है जब कोई शख़्स दूसरे को अपने से कमतर समझ रहा हो। इसीलिए कुरआन मजीद ने तुफ़ूक़ की सभी शक्लों को ख़त्म करते हुए फ़रमाया कि किसी को किसी पर कोई वरीयता नहीं प्राप्त है। तमाम इनसान हज़रत आदम की औलाद हैं। सबको अल्लाह ने एक मर्द और एक औरत से पैदा किया है। अलबत्ता तुम लोग जिस तरह अलग–अलग ख़ानदानों और क़बलों में बंटे नज़र आते हो, उसका अर्थ यह नहीं कि तुम एक दूसरे पर वरीयता देने के लिये ऐसा किया गया या ऐसा तुम्हारी किसी फ़ज़ीलत की

बुनियाद पर हो। बल्कि यह इसलिए हुआ ताकि तुम एक दूसरे को पहचान सको। जिस तरह मुल्क सूबों में तक़सीम कर दिया जाता है, उसका मक़सद यह होता है कि एक दूसरे को मालूम करने और निज़ाम के अन्दर आसानी हो। इसी तरह हर शख़्स का कोई नाम रखा जाता है, ताकि उसके ज़रिये वह पहचाना जा सके। वरना बिना नाम के किसी भी शख़्स से बात करना मुश्किल हो जाएगा। क्योंकि अगर कोई शख़्स सिर्फ़ "फ़ला साहब या अमुक व्यक्ति" कह कर किसी का पता लगाए तो बताना मुश्किल होगा। लेकिन अगर वह नाम बता दे तो जो लोग उसको जानते होंगे वे फ़ौरन बता देंगे कि इस नाम का व्यक्ति किसी शहर और किस मुहल्ले में रहता है। मानो यह बंटवारा एक सुविधा और पहचानने में आसानी के लिये किया गया है। इसीलिए अल्लाह तआला ने सभी इनसानों को गिरोहों में बांट दिया है ताकि एक दूसरे को जानने और एक दूसरे तक पहुचंने में आसानी हो। इसका मतलब यह बिल्कुल नहीं कि फ़ला शख़्स, फ़लां शख़्स से बेहतर है, और फ़लां फ़ला से कमतर है। बल्कि यह तक़सीम केवल पहचान और संपर्क के लिये है। यद्यपि इसके साथ यह भी बता दिया गया कि अल्लाह तआला के निकट इनसानों में सबसे ज़्यादा इज़्ज़त व बड़ाई वाला वह व्यक्ति है जो लोगों में सबसे ज़्यादा एहतियात की ज़िन्दगी गुज़ारता हो, बुराइयों से बचता हो, अल्लाह के हुक्मों पर चलने की कोशिश करता हो, उसका सच्चा फ़रमाबरदार हो, पता चला कि किसी के इज़्ज़त वाले होने का पता लगाने के लिये उसके बाप या ख़ानदान की महानता का पता लगाने की आवश्यकता नहीं बल्कि यह देखना ज़रूरी है कि उसका अल्लाह से कैसा संबंध है, वह किसी दर्जा हर काम में एहतियात बरतने वाला है, क्योंकि जिस शख़्स का अल्लाह तआला से संबंध ज़्यादा होगा उसको अल्लाह की तरफ़ से इज़्ज़त भी ज़्यादा मिलेगी। जिसके नतीजे में हर जगह महबूबियत नज़र आयेगी और जिस व्यक्ति का अल्लाह तआला से संबंध कम होगा उसको अल्लाह तआला की तरफ़ से इज़्ज़त भी कम मिलेगी और जब अल्लाह तआला की तरफ़ से इज़्ज़त कम मिलेगी तो ऐसे शख़्स को दूसरी जगहों पर भी कोई इज़्ज़त हासिल नहीं होगी। बल्कि अगर ऐसे व्यक्ति को जूतों के पास भी जगह मिल जाती है तो भी बड़ी इज़्ज़त की बात है, मालूम हुआ कि इज़्ज़त व ज़िल्लत का स्तर तक़वा है, बड़े ख़ानदान या भाषा से संबंध नहीं।

आयत के आख़िर में कहा गया है कि अल्लाह तआला हर चीज़ को जानता है और हर एक चीज़ से बाख़बर है, यानि अगर कोई शख़्स उन शिक्षाओं के बावजूद अस्ल इज़्ज़त वाला किसी ऐसे शख़्स को समझे जो तक़वे वाला न हो, दुनिया के एतबार से किसी चीज़ पर तक़वा दिखाए, लोगों को अपने से कमतर समझे, और ज़ाहिर में कुछ और दिखाने की कोशिश करे कि हम किसी को बड़ा नहीं समझते, तो ऐसा शख़्स याद रखे कि अल्लाह तआला तमाम बन्दों के दिलों के हाल को अच्छी तरह से जानता है।

हसद से बचो

हसद सभी बुराईयों की जड़ है। शैतान की मिलास ले लो उसने हज़रत आदम अलै0 से हसद किया और खुद को अनगिनत तबाहियों में डालकर ज़िल्लत के गढ़े मे गिर गया। अबूजहल की मिसाल ले लो जिसने रसूलुल्लाह स0अ0 से हसद की तो अबुल हकम से अबूजहल हो गया। इस तरह की अनगिनत मिसाले हैं और बहुत से लोग हसद की वजह से ज़लील व ख़्वार हुए। अल्लाह तआला ने नबियों का वास्ता इसीलिए बनाया है ताकि उनकी रोशनी में यह हसन सामने आ जाए।

हसद की बुनियादों में से बड़ाई व चालाकी से बचो और विनम्रता अपनाओ। नबियों के आने के बाद हसद इसलिए नुमाया हुआ कि उससे पहले अल्लाह पर्दों में पोशीदा था। तुम नबियों से इसलिए हसद करते हो कि वे तुममें से थे फिर तुमसे अफ़ज़ल क्यों हो गये?

रसूलुल्लाह स0अ0 की फ़ज़ीलत व बुजुर्गी सबसे बढ़कर है और उसे अल्लाह तआला ने तय किया है। दूसरे नबियों और लोगों ने इसे कुबूल कर लिया तो फिर तुम्हें भी उनकी बुजुर्गी और फ़ज़ीलत को मानने में हसद नहीं करनी चाहिये। नबियों के बाद अब औलिया अल्लाह का ज़माना है। बस हासिदों के लिये क़यामत के दिन तक आज़माइश है, जिसकी आदत नेक होगी वह उनकी पैरवी में किसी प्रकार का संदेह नहीं करेगा।

सबसे बड़े एहसान की मांग

मौलाना अब्दुल्लाह हसनी नदवी रह०

अल्लाह तआला ने सारी दुनिया पर जो एहसान किये हैं उनमें सबसे बड़ा एहसान और सबसे बड़ा करम नबियों को दुनिया में हिदायत के लिये भेजना है, और उनमें भी सबसे बड़े व हम सबके इमाम हज़रत मुहम्मद स0अ0 का होना है। आपको अल्लाह तआला ने सारी दुनिया की हिदायत व रहनुमाई और क़यामत तक के आने वाले इनसानों को जन्नत में ले जाने के लिये भेजा। पता चला कि इनसानों पर अल्लाह तआला का सबसे बड़ा करम यह है कि उसने उनकी हिदायत के लिये हिदायत वालों को भेजा। और सबसे आख़िर में हज़रत मुहम्मद स0अ0 को दुनिया में भेजा, इसीलिए सारी दुनिया में जहां कहीं भी, जिस कोने में भी ख़ैर या भलाई है वह सब रसूलुल्लाह स0अ0 का दिया हुअ तोहफ़ा है। आपकी मेहनत और लगन का नतीजा है। आपकी बरकतों का नतीजा है। आप स0अ0 की हिदायत के लिये की गयी कोशिश का हासिल है। चाहे वह किसी एतबार से हो, इसलिए कि अल्लाह ने आपको सारे जहानों के लिये रहमत बनाकर भेजा है। कुरआन मजीद में फ़रमाया गया है:

"यानि आपको सारे जहानों के लिये रहमत बनाकर भेजा गया है।" (सूरह अम्बिया: 107) पता चला कि आपकी रहमत इनसानों के लिये भी है, पेड़–पौधों के लिये भी हैं, मानो आपकी रहमत इतनी बड़ी और इतने आलमों के लिये है जिसके बारे में कोई सोच भी नहीं सकता है।

आप ख़ुद पूरी तरह से रहमत थे, जिसको यूं कहा गया है: "अल्लाह की तरफ़ से जो आपको रहमतें मिली हैं।" और उससे जो आपको मक़ाम मिला है और आपको इनसानियत का जो दर्द मिला है वह मानो कि इसी रहमत का नतीजा है और इससे आप सरापा रहमत हो गये। मानो आपका एहसान हर इनसान ही पर नहीं है, बल्कि कायनात के हर ज़र्रे पर है, कोई चप्पा, कोई इलाक़ा ऐसा नहीं है जिस पर रसूलुल्लाह स0अ0 का एहसान न हो। गरज़ कि हर जगह जहां भी जो कुछ बहार है, वह रसूलुल्लाह स0अ0 का दिया हुआ अतिया ही है। चाहे वह मानवाधिकार का मामला हो, या जानवरों पर रहम करने के बारे में क़ानून हों, या पेड़ लगाने की मुहिम हो, इन सबको अगर आप देखेंगे तो इन सभी बातों की अस्ल रसूलुल्लाह स0अ0 के पास ही पहुंचेगी। यानि उन सभी चीज़ों में अगर किसी ने अगर किसी ने रहनुमाई की है तो वह रसूलुल्लाह स0अ0 की ज़ात है। लिहाज़ा आपका एहसान हर ज़र्रे पर है, हर चप्पे पर है, ज़मीन के हर हिस्से पर है और सबसे बढ़कर इनसान पर है। और इनसानों में भी जितने तबक़े हैं उन सब पर है। चाहे वह औरत की आज़ादी का मसला हो कि इस दुनिया में यदि किसी ने उनको अधिकार दिलाए हैं तो वह आप स0अ0 की ही ज़ात है। वरना आप स0अ0 के आने से पहले जहां कहीं भी औरत थी उसका अपमान हो रहा था और उसका ग़लत इस्तेमाल हो रहा था। चाहे अरब हो या हिन्दुस्तान हो, चाहे रोम हो या पोप के खित्ते हों, यह कि हर जगह औरत का जो हाल था वह बयान के क़ाबिल नहीं था। इसी तरह ग़ुलामों का हाल था कि उनके साथ जो सुलूक हो रहा था वर आख़िरी दर्जे का गन्दा सुलूक था, ग़ुलामों को भी अगर किसी ने हक़ दिया है तो वह रसूलुल्लाह स0अ0 की ज़ात है, जहां तक यूरोप की बात है तो उसने ग़ुलामों पर ज़ुल्म करने में इस हद तक जुर्रत की थी कि वहां बहुत सी दावतों में ग़ुलाम जलाए जाते थे और उनकी रोशनी में खाना खाया जाता था। लेकिन अफ़सोस है कि आज वही बड़े–बड़े दावे करते हैं और आज उन्हीं लोगों के यहां मानवाधिकार की आवाज़ उठायी जाती है। हालांकि उनका स्वयं का अतीत बिल्कुल अंधकारमय और खोखला है।

पता चला कि आप स0अ0 पूरी दुनिया के इतने बड़े मोहसिन हैं कि आप जैसा एहसान करने वाला न पहले था, न ही आपके ज़माने में था, न क़यामत तक कोई होगा, अगर हम आपका एहसान न जाने और चुकाने की कोशिश न करें तो हमसे ज़्यादा एहसान फ़रामोश दुनिया में कोई नहीं होगा कि रसूलुल्लाह स0अ0 जैसा मोहसिन, करम करने वाला, उम्मत का दर्द रखने वाला, रहम करने वाला, मेहरबानी करने वाला, एक–एक आदमी की फ़िक्र करने वाला, कमज़ोरों का साथ देने वाला, उनके साथ रहने वाला, ऐसी हस्ती का एहसान कितना बड़ा होगा।

लेकिन उससे भी बढ़कर पूरी उम्मत पर अल्लाह तआला करम यह है कि उसने ऐसे बड़े और महान मोहसिन की एहसान फ़रामोशी से बचने के लिये दरूद

शरीफ़ का निज़ाम रख दिया, क्योंकि अगर कोई शख़्स आपके एहसान को न जानता तो एहसान फ़रामोश समझा जाता, और गर्दन मार देने के लायक़ होता और दुनिया व आख़िरत में ज़लील व ख़्वार कर दिया जाता, लेकिन अल्लाह तआला को यहां भी लोगों का ख़्याल आया इसलिये नमाज़ के अन्दर यह हुक्म दे दिया कि रसूलुल्लाह स0अ0 पर सलात व सलाम पढ़ो, क्योंकि मुमकिन था कि दुनिया में बहुत से ऐसे बुरे लोग भी पैदा होते जो रसूलुल्लाह स0अ0 पर दरूद व सलाम नहीं भेजते, लेकिन चूंकि नमाज़ पढ़ना फ़र्ज़ है इसलिए इसी के अन्दर फ़र्ज़ की हैसियत से फ़र्ज़ का पढ़ना भी लाज़िम कर दिया, पता चला यह भी अल्लाह तआला का बड़ा करम है।

इसी तरह अल्लाह तआला ने वे अल्फ़ाज़ भी दे दिये जिनके अन्दर हम आप स0अ0 पर दरूद व सलाम पढ़ सकें। क्योंकि जो बड़ा आदमी होता है उसके पास छोटे लोग अपनी बात को पेश करने में हिचकिचाते हैं। इसीलिए कि उनके पास वे अल्फ़ाज़ नहीं होते जिनके अन्दर वे उनसे बात कर सकें। लिहाज़ा यह भी अल्लाह तआला का एक करम हुआ कि उसने दरूद शरीफ़ के अल्फ़ाज़ भी अता फ़रमा दिये। उसके बाद अल्लाह तआला का यह भी बहुत बड़ा करम है कि उसने दरूद शरीफ़ के पढ़ने वाले से मज़ीद रहमतों के नुज़ूल का वादा भी फ़रमाया है। फ़िर फ़रमाया, एक दरूद के बदले में अल्लाह तआला तुमको दस गुना पलट कर देगा। दरूद शरीफ़ के पढ़ने पर रहमतों के नुज़ूल की बशारतों को वाज़ेह करने की एक हिकमत यह भी है कि कहीं लोग इस ज़ोम में न पड़ जाएं कि जिस हस्ती के तुफ़ैल में सारे आलम को हिदायत मिली है और उसके बारे में दरूद शरीफ़ पढ़ने का भी हुक्म दिया गया है तो क्यों न इसी से अपनी हाजत को पूरा करने में सवाल किया जाए। इसीलिए अल्लाह तआला ने उस ज़हनियत से दूर रखने के लिये यह ऐलानाकिया कि दरूद शरीफ़ के पढ़ने में जो इनामात मिलेंगे वे अल्लाह तआला ही के पास से मिलेंगे और इसी से यह बात भी मालूम हो गयी कि इनसान को जिस चीज़ की भी हाजत हो अल्लाह तआला ही से तलब करना चाहिये। क्योंकि ज़रूरतों को पूरा करना सिवाए अल्लाह के किसी के बस में नहीं है। चाहे वह नबी हो या कुतुब हो, या वली हो या अब्दाल हो या ग़रज़ कि किसी भी मक़ाम पर बैठा हुआ हो लेकिन मांगना सिर्फ़ ख़ुदा से ही, ग़ैरुल्लाह से हरगिज़ नहीं मांगा जा सकता है।

एक हदीस से मालूम होता है कि दरूद पढ़ने वाले शख़्स को रोज़े क़यामत में रसूलुल्लाह स0अ0 का साथ नसीब होगा। और यह बड़ी महरूमी होगी कि कोई आपके साथ में रहना पसंद न करे। लिहाज़ा आपकी क़ुरबत को पाने के लिये दरूद का बेहतर तरीक़ा उम्मत को अता फ़रमा दिया गया। इसलिए शमाएल–ए–नबवी में आता है कि आपसे सबसे ज़्यादा करीब वह होता था जो सबसे ज़्यादा शुभचिंतक होता था। सबका अच्छा चाहने वाला होता था, इसी तरह आज भी जो शख़्स जितना ज़्यादा उस कुढ़न को रखता होगा वह क़यामत के दिन उतना ही रसूलुल्लाह स0अ0 के क़रीब होगा। पता चला रसूलुल्लाह स0अ0 का साथ पाने के लिये दरूद पढ़ना और सुन्नत की इत्तेबा करने वाला होना ज़रूरी है और यह वह अज़ीम शर्फ़ जिसको वास्ते सहाबा तड़पते थे और आज भी मुहब्बत वाले याद करके तड़प जाते हैं।

इसी तरह एक दूसरी रिवायत से पता चलता है कि उससे बढ़कर कोई कंजूस नहीं हो सकता जिसके सामने सरवरे कायनात मुहम्मद स0अ0 का ज़िक्र किया जाए ओर उसके बावजूद आप स0अ0 पर दरूद न भेजे इसलिए कम से कम सल्लल्लाहु अलैहि वस्सल्लम कहना तो हर मुसलमान पर, मुसलमान होने के वास्ते ज़रूरी होता है लेकिन अगर उससे बढ़कर किसी मुसलमान का यह हाल हो जाए कि उसके सामने नामे गिरामी लिया जाए तो उसके अन्दर मुहब्बत का एक चश्मा जारी हो जाए तो यह मुहब्बत अच्छी चीज़ है, क्योंकि मुहब्बत और मुहम्मद दोनों लाज़िम मलज़ूम हैं। एक हदीस से यह भी मालूम होता है कि मलाएक हमारा दरूद व सलाम आप स0अ0 की ख़िदमत में पेश करते हैं। जिसका दरूद व सलाम आप स0अ0 क़ुबूल फ़रमा लें तो उसके रफ़े दरजात का अंदाज़ा नहीं किया जा सकता। इसलिए जो शख़्स जिस क़दर ताल्लुक़ व मुहब्बत के साथ दरूद व सलाम पढ़ेगा उतनी ही आप स0अ0 को ख़ुशी होगी और उसी दर्जे में हमको अल्लाह तआला के दरबार से नवाज़ा जाएगा। इसलिए कि अल्लाह ने यूं तो एक दफ़ा दरूद भेजने पर दस रहमातें के नुज़ूल का वादा किया है लेकिन अगर कोई और सच्ची नियत अस्तग़फ़ार के साथ पढ़ता है तो अल्लाह तआला के यहां और नवाज़ने में भी कोताही से काम नही लिया जाता।

भीख मांगना

मुस्लिम समुदाय के माथे पर एक बदनुमा दाग़

मौलाना ख़ालिद सैफ़ुल्लाह रहमानी

29/जुलाई/2016 को हिन्दुस्तान टाइम्स अख़बार में यह सर्वे छपा हुआ है कि भारत में जो लोग भीख मांगने का काम करते हैं और भीख मांग कर काम चलाते हैं, उनमें से 25 प्रतिशत संख्या मुसलमानों की है। यानि हर चार भिखारी में से एक मुसलमान होता है। यह बहुत ही अफ़सोस और शर्म की बात है कि जिस समुदाय के नबी ने शिक्षा दी हो कि "देने वाला हाथ लेने वाले हाथ से बेहतर है" वह समुदाय भीख मांगने के लिये मशहूर हो जाये। यह बात बहुत कड़वी है लेकिन सच है।

आजकल हमारी मस्जिदों, धार्मिक स्थलों और धार्मिक सभाओं की एक पहचान भिखारियों की भीड़ और एक विशेष प्रकार की लय व धुन में उनकी ओर से प्रश्नवाचक वाक्यों की तकरार भी है। उनमें से बहुत से के अन्दर अलहाह की अधिक योग्यता होती है और आपके लिये उनको नज़रअन्दाज़ करके आगे बढ़ जाना बहुत कठिन होता है। बहुतों की हिम्मत देखने लायक़ होती है। यदि आपने उन्हें भीख नहीं दी या जितनी वे मांग रहे हैं उतनी नहीं दी तो उनकी घूरती हुई निगाहों को सहने के अलावा और कोई चारा नहीं है। कुछ ऐसे भी हैं जो आपको दो–चार बातें सुनाने से भी नहीं चूकते। वे इस प्रकार सवाल करते हैं कि जो न जानता हो वह आपको उनका कर्ज़दार समझ बैठे। धार्मिक स्थलों के अतिरिक्त पर्यटन स्थल, रेलवे स्टेशन, बस स्टैन्ड और भीड़–भाड़ वाले स्थान हैं। इसलिए यहां उनकी अच्छी–खासी संख्या न केवल यह कि मौजूद रहती है बल्कि सुबह–सवेरे से लेकर देर रात तक वह अपने काम में लगी रहती है। पुलिस वालों का डंडा और देने वालों की डांट–डपट भी उन पर कोई असर नहीं डालती है और न ही उनको अपने काम से डिगा पाती है।

यह भीख मांगने वाले भी कई तरह के होते हैं। कुछ सेहतमन्द, कुछ वाक़ई मरीज़ और अधिकतर बनावटी मरीज़। मरीज़ और विकलांग आम तौर पर बेकार लोगों में गिने जाते हैं लेकिन इस क्षेत्र में वे बहुत ही कारामद और लाभकारी हैं। इसीलिये बहुत से स्वस्थ्य भिखारी अंधे और विकलांग भिखारियों का सहयोग प्राप्त करते हैं और एक दूसरे की मदद से पत्थर दिलों को मोम बनाने का काम करते हैं। उनमें बच्चे भी हैं, जवान भी, बूढ़े भी, मर्द हैं और औरतें भी, कमसिन लड़कियां भी, जवान लड़कियां और बूढ़ी औरतें भी। भीख मांगने के इस पेशे में हर तरह के लोग मौजूद हैं। ऐसे गिरोह भी पकड़े गये हैं जो देहातों और दूर–दराज़ के इलाक़ों से बच्चों को पकड़कर लाते हैं और उन्हें एक हद तक विकलांग बनाकर उनसे भीख मंगवाते हैं। ज़माने के उन्नति के साथ–साथ भीख मांगने के लिये भी नवीन साधनों का प्रयोन शुरू हो गया है। इसीलिए बहुत से भीख मांगने वाले इन्टरनेट की मदद से अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पैठ बिठाने के लिये प्रयासरत हैं।

ऐसा लगता है कि भीख मांगने वालों का यह गिरोह इस काम को पैसा कमाने का एक आसान साधन समझते हैं। कुछ दिनों पहले अख़बार में यह ख़बर आयी थी कि हैदरबादा में भीख मांगने वालों की आमदनी का औसत तीन–चार हज़ार रुपये प्रतिमाह है। ख़ास–ख़ास मौक़े जैसे, रमज़ान व ईद इत्यादि में इसमें बहुत बढ़ोत्तरी हो जाती है। इसका नतीजा यह है कि वे पेशे को छोड़ने के लिये किसी भी हालत में तैयार नहीं हैं। यदि आप उन्हें काम करने को कहें या ख़ुद अपने यहां काम करने की दावत दें तो वे ऐसा मुंह बनाएगें कि मानो आपने उनका अपमान किया हो। जैसे कि वे अपने काम से संतुष्ट हैं और उन्हें यह करने में कोई शर्म नहीं है। .....(शेष पेज 12 पर)

तौहीद क्या है?

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

शिर्क फ़िस्सिफ़ातः

इनसानी समाज में शिर्क की यह क़िस्म भी हर दौर में प्रचलित रही है, इसका मतलब यह है कि जो सिफ़ात (विशेषता/गुण) अल्लाह तआला के साथ ख़ास हैं, उसकी उन सिफ़ात में दूसरों को भी शरीक (शामिल) मानना। इसमें दो चीज़ें ज़्यादा अहम हैं: एक "कुदरत" दूसरे "इल्म", यह दो ऐसी अहम सिफ़ात हैं कि आम तौर पर आदमी इन ख़ासियतों में अल्लाह तआला के साथ दूसरों को शरीक कर लेता है और शिर्क में पड़ जाता है।

कुदरत और इल्म दोनों सिफ़ात अपने कमाल (पराकाष्ठा) के साथ अल्लाह के पास हैं। दुनिया में कोई ऐसा नहीं जिसको हर चीज़ का इल्म हो, हर राज़ को जानने वाली सिर्फ़ वही एक ज़ात है। हर चीज़ उसी के क़ब्ज़े में है। आज इस अक़ीदे में भी बड़ी कमज़ोरी नज़र आती है, हम यह बात भूल जाते हैं कि हमारे इस अक़ीदे में कितनी मज़बूती होनी चाहिए। हमें यह ख़्याल नहीं रहता है कि हमारे दीन की बुनियाद तौहीद के इसी अक़ीदे पर क़ायम है। अगर यह बुनियाद कमज़ोर पड़ जाएगी तो फिर बाक़ी काम भी कमज़ोर हो जाएंगे और अल्लाह तआला के यहां कुबूल नहीं किये जाएंगे। क्योंकि यह अक़ीदा शिर्क के दरवाज़े खोल देता है और शिर्क के साथ अल्लाह के यहां कोई काम कुबूल नहीं होता। लिहाज़ा अल्लाह तआला के अलावा किसी के बारे में तसर्रुफ़ का अक़ीदा रखना, किसी को हर चीज़ पर क़ादिर समझना, अल्लाह के अलावा किसी दूसरे के लिये इबादत की इन्तहाई शक्ल अपनाना, उसको राज़ी करने की कोशिश करना, किसी और से रोज़ी–रोटी मांगना, सर झुकाना, मुश्किल दूर करने वाला समझना, यह सब चीज़े ग़ैर इस्लामी हैं, मगर अफ़सोस की बात है कि मुश्रिकीन की यह विशेषताएं आज मुसलमानों में भी कसरत से पायी जाती हैं, यह सारी बातें शिर्क की हैं और इनसे बचना हर मुसलमान की ज़िम्मेदारी है।

आज एक बड़ी संख्या उन लोगों की भी मौजूद है जो सरवर–ए–कायनात मुहम्मद मुस्तफ़ा स0अ0 जो कि अल्लाह के महबूब नबी हैं, को ही मुश्किल दूर करने वाला समझ बैठी है, आपको तसर्रुफ़ का हक़दार समझती है, आपके बारे में ऐसे मुश्रिकाना ख़्याल रखती है, जिनका ख़ालिस तौहीद से खुला टकराव नज़र आता है। कई बार उनके ख़्यालों का अन्दाज़ा इसी फ़िक्र के अशार से भी होता है, जिनमें यहां तक कह दिया गया है कि अल्लाह तआला ने अपनी कुर्सी पर हज़रत मुहम्मद स0अ0 को बिठा दिया और ख़ुद फ़ारिग़ हो गया, अब कायनात में जो भी कुछ हो रहा है, वह सब आप स0अ0 के करने से हो रहा है। तौहीद के ख़िलाफ़ इस खुले हुए मुश्रिकाना अक़ीदे के साथ अगर कोई यह दावा करे कि वह हुज़ूर स0अ0 से सच्ची मुहब्बत करने वाला है तो ज़ाहिर सी बात है कि वह मुहब्बत नहीं सही माने में दुश्मनी है। और स0अ0 की शान में बहुत बड़ी तौहीन है। इसीलिए मुहब्बत व सम्मान का नियम यह है कि जिसका जो मक़ाम है, उसको उसी मक़ाम पर रखा जाए, अगर उससे आगे या पीछे किया गया तो यह उसकी तौहीन समझी जाएगी।

मौजूदा दौर में मुश्रिकीन के अक़ीदों से मिलते–जुलते जो अक़ीदे व नज़रिये मुसलमानों में पैदा हो रहे हैं, मुश्रिको के उन अक़ीदों से बचने की सख़्त ज़रूरत है। यह यक़ीन बिठाने की ज़रूरत है कि अल्लाह तआला की सिफ़ात में कोई शरीक नहीं, न उसकी कुदरत में कोई शरीक है और न ही इल्म में, उसी को हर तरह के दख़ल का अधिकार है, उसी के पास सभी चीज़ों का इल्म है। इबादत में चरम सीमा का सम्मान व प्रेम के सभी रूप उसी के लिये अपनाए जाने चाहिए। अगर यह अक़ीदा बैठ जाए तो हमारी ज़िन्दगी पूरी हो जाएगी और अगर इसमें ज़रा सी भी कोताही और ग़फ़लत से काम लिया जाए तो तौहीद में ख़लल पैदा होना यक़ीनी बात है। इस बारे में बहुत से उन लोगों को भी चौकन्ना रहना चाहिये जो बहुत दीनदार समझे जाते हैं कि कई बार उनके यहां भी अनजाने में तौहीद में ख़लल पैदा हो जाता है, जैसे बुज़ुर्गान–ए–दीन के बारे

में बहुत से लोगों का यह मानना है कि वे जो चाहेंगे कर देंगे, हम उनके पास जाकर दुआ कराकर सब करा लेंगे, उनके फ़ैज़ से हमारी मुश्किले हल हो जाएंगी, अगर किसी के फ़ैज़ से मुश्किलें हल करने का यह मतलब है कि उनके दख़ल से मुश्किल आसान हो जाएगी तो यह अक़ीदा सरासर ग़लत अक़ीदा है, हालांकि यह सोचना कि फ़लां बुज़ुर्ग की नेकियों की बरकत से अल्लाह के फ़ज़ल से हमारा काम आसान हो गया, तो फिर भी ग़नीमत है। मगर याद रहे कि किसी के बारे में तसर्रुफ़ (अल्लाह के किसी अमल में दख़ल) का अक़ीदा रखना ख़ालिस तौहीद से मुंह मोड़ना है। हर किसी को यही यक़ीन रखना चाहिये कि अगर अल्लाह तआला चाहेंगे तो हमारा काम होगा, वरना केवल किसी वली या बुज़ुर्ग की दुआओं से हरगिज़ हमारा काम होने वाला नहीं। अगर इस बात की गुंजाइश होती तो नबी करीम स0अ0 के ज़रिये उन लोगों को हिदायत ज़रूर मिलती, जिनके लिये रसूलुल्लाह स0अ0 दिल से चाहते थे कि उन्हें हिदायत मिले, लेकिन अल्लाह तआला ने यही फ़र्क साफ़ करने के लिये साफ़ तौर पर कह दिया: "आप जिसको चाहें उसको हिदायत नहीं दे सकते, हां अल्लाह जिसको चाहता है हिदायत देता है।" (सूरह क़ससः 56)

पता चला कि हिदायत देने का काम अल्लाह का है। आपका काम जो हुक्म दिया गया है उस पर अमल करना है। अस्ल में दख़ल उसी ज़ात का है, वही हर चीज़ पर क़ादिर है, उसी के हाथ में किसी की तक़दीर को अच्छा–बुरा करना है, उसी के हाथ में मौत–ज़िन्दगी है। मानो इस आयत से यह बात बिल्कुल साफ़ हो गयी कि हिदायत दे देना सिर्फ़ अल्लाह का काम है। नबी करीम स0अ0 का काम सिर्फ़ रास्ता बताना है, तो किसी बुज़ुर्ग या वली के लिये ऐसा अक़ीदा रखना कि वे जो चाहेंगे कर लेंगे, खुला हुआ शिर्क है।

अफ़सोस की बात है कि आज मुसलमानों की एक बड़ी संख्या अल्लाह के वलियों के बारे में मुश्रिकाना अक़ीदा रखती है। किसी के बारे में यह राय बनी है कि मौत का फ़रिश्ता किसी शेख़ की रूह क़ब्ज़ करने के लिये आए, शेख़ इसके लिये राज़ी न हुए, अतः उन्होंने मौत के फ़रिश्ते को ही पकड़ लिया और उन्हीं की रूह क़ब्ज़ कर ली। किसी के बारे में यह सोच बनी है कि एक बार मौत का फ़रिश्ता रूहें क़ब्ज़ करके किसी थैले में ले जा रहा था, रास्ते में शेख़ साहब कि मौत के फ़रिश्ते से मुलाक़ात हुई, थैले में देखा तो एक ऐसे साहब की रूह भी थी जो कि शेख़ साहब के मुरीद थे, इसलिए उन्होंने थैले पर हाथ मारा और सारी रूहें आज़ाद करा लीं। संक्षेप में यह कि इस प्रकार की भ्रान्तियों का ऐसा सिलसिला चल पड़ा है जिनमें शिर्क होने में कोई शुब्हा बाक़ी नहीं रह जाता और अक़्ल व नकल से उनका दूर का भी वास्ता नहीं होता। तौहीद के अक़ीदे के मुकम्मल होने के लिये ज़रूरी है कि शिर्क की उन सभी क़िस्मों से दूर रहा जाए, जिनसे तौहीद के अक़ीदे को घुन लगता है। क़ुरआन मजीद में तौहीद के अक़ीदे पर ख़ास ध्यान दिलाया गया है। उसकी सभी शक्लों से बचने के बारे में कहा गया है, जिनसे तौहीद का अक़ीदा कमज़ोर होता है। इसीलिए हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी रह0 कहते थे कि यदि कोई इनसान सही दिल और सही नियत से पढ़ ले तो वह कभी भी मुश्रिक नहीं हो सकता। हां यदि कोई क़ुरआन मजीद बिना समझे या उसकी कोशिश किये बिना ही पढ़े तो यक़ीनन सवाब तो मिलेगा लेकिन क़ुरआन के पैग़ाम से महरूमी होगी। बात यह है कि अगर कोई इनसान खुली आंखों से क़ुरआन का अध्ययन करेगा तो मुश्रिक बाक़ी नहीं रह सकता, इसलिए कि क़ुरआन मजीद में शिर्क की सभी शक्लें तफ़सील से बयान कर दी हैं।

"और तुम्हारा माबूद तो एक ही माबूद है उस रहमान व रहीम के अलावा कोई माबूद नहीं।" (सूरह बक़राः 163)

इस आयत में यह बात साफ़ तौर पर कह दी गयी कि तुम्हारा माबूद सिर्फ़ एक ही माबूद है, तुमको उसी की इबादत करना है, यहां माबूद के लिये "इला" का शब्द प्रयोग हुआ है, जिसका अथ "ताला" व "ताबुद" है, यानि उपासना व इबादत के सभी रूप उसके सिवा किसी भी देवी–देवता के लिये जायज़ नहीं, जैसा कि जाहिलियत के ज़माने में लोगों ने इबादत के अन्दर दूसरों को शरीक कर लिया था, अस्ल ताक़त के अलावा दूसरी ताक़तों को सजदे के लायक़ समझने लगे थे, ...(शेष पेज 14 पर)

सफ़्फ़बन्दी के कुछ मसले

मुफ्ती राशिद हुसैन नदवी

सफ़ सीधी रखने की ताकीदः

फ़र्ज़ नमाज़ के लिये जिस तरह जमाअत की ताकीद (आग्रह) की गयी है और उसकी फ़ज़ीलत बतायी गयी है, उसी तरह सफ़ (पंक्ति/लाइन) सीधी रखने की भी बहुत ताकीद की गयी है। हज़रत नोमान बिन बशीर (रज़ि0) फ़रमाते हैंः "नबी करीम (स0अ0) हमारी सफ़े इस तरह सीधी करते थे मानो उससे तीर सीधा करेंगे।" यहां तक कि आपने महसूस किया कि हमने समझ लिया है, फिर एक दिन आप निकले, यहां तक कि क़रीब था कि तकबीर कहें कि एक शख़्स को सफ़ से अपना सीना बाहर निकाले हुए देखा तो आप (स0अ0) ने फ़रमायाः "अल्लाह के बन्दो! तुम लोग सफ़ें ज़रूर से ज़रूर सीधी रखा करो, वरना अल्लाह तआला तुम्हारे चेहरे बिगाड़ देगा।" (मुस्लिम)

हज़रत अनस (रज़ि0) से रिवायत है किः "नमाज़ की अक़ामत कही गयी तो नबी करीम (स0अ0) ने हमारी तरफ़ रुख़ किया और कहाः तुम लोग अपनी सफ़ें सीधी कर लो और मिल–मिल कर खड़े हो, इसलिए कि मैं पीछे से देखता हूं।" (मुत्तफ़िक़ अलैह)

पहली सफ़ की फ़ज़ीलतः

हज़रत अबू अमामा (रज़ि0) से रिवायत है कि नबी करीम (स0अ0) ने इरशाद फ़रमायाः बेशक अल्लाह तआला और उसके फ़रिश्ते पहली सफ़ पर रहमत नाज़िल करते हैं। लोगों ने पूछाः ऐ अल्लाह के रसूल (स0अ0)! दूसरी सफ़ पर?कहाः बेशक अल्लाह तआला और उसके फ़रिश्ते पहली सफ़ पर रहमत नाज़िल करते हैं, लोगों ने पूछाः और दूसरी सफ़ पर?कहाः अल्लाह तआला और उसके फ़रिश्ते पहली सफ़ पर रहमत नाज़िल करते हैं, लोगों ने कहाः और दूसरी पर?और दूसरी पर भी। (मुसनद अहमद)

हज़रत जाबिर बिन समरह (रज़ि0) रिवायत करते हैं कि नबी करीम (स0अ0) ने फ़रमायाः "तुम लोग उस तरह सफ़ क्यों नहीं बनाते जिस तरह फ़रिश्ते अपने रब के सामने सफ़ बनाते हैं?हमने कहाः ऐ अल्लाह के रसूल! फ़रिश्ते अपने रब के पास किस तरह सफ़ बनाते हैं?फ़रमायाः पहली सफ़ें पूरी करते हैं और सफ़ में मिलकर खड़े होते हैं। (मुस्लिम)

हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि0) फ़रमायाः "मर्दों की सबसे अच्छी सफ़ उनकी पहली सफ़ है और औरतों की सबसे अच्छी सफ़ उनकी आख़िरी सफ़ है और सबसे बुरी सफ़ उनकी पहली सफ़ है।" (मुस्लिम)

अब हम नीचे सफ़ बन्दी के बारे में कुछ ज़रूरी बातें लिख रहे हैंः

1– जब मुक़्तदी एक होः

अगर मुक़्तदी (नमाज़ पढ़ने वाला) एक मर्द हो चाहे नाबालिग़ बच्चा ही क्यों न हो तो वह इमाम की दाहिनी ओर इस तरह से खड़ा हो कि उसका पैर इमाम के पैर के आगे न बढ़े और इसमें एतबार एड़ी का होगा। अगर एड़ी इमाम की एड़ी के बराबर रखी लेकिन पैर बड़ा होने की वजह से उंगलिया इमाम की उंगलियों से आगे हो गईं तो इसमें कोई हर्ज नहीं होगा और अगर मुक़्तदी बाएं तरफ़ खड़े होकर नमाज़ पढ़ ले तो नमाज़ हो जाएगी, लेकिन ऐसा करना मकरूह होगा। मुक़्तदी को दाएं तरफ़ खड़ा करने की ज़िम्मेदारी अस्ल में इमाम की है तो अगर नमाज़ शुरू करने से पहले कोई एक आ जाये तो उसे दाएं तरफ़ आने का हुक्म दे और नमाज़ शुरू होने के बाद आये तो इशारे से दाहिनी तरफ़ आने को कहे। (शामी)

इसलिये कि हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि0) से रिवायत है कहते हैं कि मैंने अपनी ख़ाला मैमूना (रज़ि0) के यहां

(जो कि उम्मुल मोमिनीन थीं) रात गुज़ारी, तो नबी करीम (स0अ0) नमाज़ पढ़ने के लिये खड़े हुए, तो मैं आपके बाएं तरफ़ खड़ा हो गया तो आपने अपनी पीठ के पीछे से मेरा हाथ पकड़ा, और इसी तरह किये हुए पीठ के पीछे से मुझे दाहिनी तरफ़ किया। (मुत्तफ़क़ अलैह)

यह हुक्म मर्दों का है। जहां तक औरतों के बारे में है तो चाहे वह एक हो या कई हों उनको पीछे रखने का हुक्म है। अगर कोई औरत को अपने बग़ल में खड़ा करके नमाज़ पढ़ाए तो ख़ुद इमाम की नमाज़ भी नहीं होगी, चाहे वह उसकी मां, बहन, बीवी जैसी औरत में से ही क्यों न हो। लेकिन इन औरतों को पीछे रखकर नमाज़ पढ़ा सकता है। (शामी)

2– जब मुक़्तदी एक से ज़्यादा हों:

अगर मुक़्तदी एक से ज़्यादा हों तो वे इमाम के पीछे खड़े होंगे। यहां तक कि अगर नमाज़ की शुरूआत करते समय एक मुक़्तदी हो, जिसकी वजह से वह दायें तरफ़ खड़ा हो गया हो फिर और लोग आ जाएं तो अब सबको पीछे खड़ा होना चाहिये। जो दायें तरफ़ ख़ड़ा था वह भी पीछे हो जाये। लेकिन यह हुक्म उस वक़्त है जब जब मर्द मुक़्तदी हों। लेकिन अगर एक मुक़्तदी मर्द है और एक औरत है तो मर्द इमाम के दाहिनी तरफ़ खड़ा होगा और और पीछे। (शामी)

इसलिये कि हज़रत जाबिर (रज़ि0) फ़रमाते हैं: नबी करीम (स0अ0) नमाज़ पढ़ने के लिये खड़े हुए तो मैं आया और आप के बायीं ओर खड़ा हो गया, तो आपने मेरा हाथ पकड़ा और मुझे घुमा दिया और अपनी दायीं ओर खड़ा कर दिया। फिर जब्बार बिन सख़र आये और नबी करीम (स0अ0) के बायीं ओर खड़े हो गये तो नबी करीम (स0अ0) ने हम दोनों के हाथों को पकड़ा और पीछे ढकेला, और अपने पीछे खड़ा कर दिया। (मुस्लिम)

हज़रत अनस (रज़ि0) से रिवायत है कि नबी करीम (स0अ0) ने उनको और उनकी मां या ख़ाला को नमाज़ पढ़ाई, तो मुझे अपनी दाहिनी तरफ़ खड़ा किया और औरत को पीछे खड़ा किया। (मुस्लिम)

हज़रत समरह बिन जन्दब (रज़ि0) से रिवायत है कहते हैं: नबी करीम (स0अ0) ने हमे हुक्म दिया कि जब हम तीन हों तो हम में से एक आगे बढ़ जाये। (तिरमिज़ी)

3– सफ़ों की तरतीब:

अगर नमाज़ पढ़ने वाले मुक़्तदियों में बालिग़ मर्द और कई नाबालिग़ बच्चे हों तो अस्ल यह है कि पहले मर्दों की सफ़ बनायी जाये, फिर बच्चों की सफ़ बनायी जाये और यदि किसी जगह औरतें भी हों तो बच्चों की सफ़ के बाद उनकी सफ़ बनायी जाये। और अगर किसी जगह किन्नर (हिजड़े) भी मौजूद हों तो उनकी सफ़ बच्चों के बाद और औरतों से पहले बनायी जाये। (हिन्दिया)

अगर बच्चा सिर्फ़ एक हो तो उसको अलग खड़ा करने की ज़रूरत नहीं है, बल्कि उसको भी सफ़ में शामिल कर लिया जाये, बल्कि अगर बच्चे कई हैं और संभावना है कि अगर उनकी अलग सफ़ बनायी गयी तो पीछे शरारत करेंगे तो उनको भी बड़ों की सफ़ में शामिल किया जा सकता है। इसी तरह अगर भीड़ ज़्यादा है, बच्चों के गुम हो जाने का ख़तरा है तब उनका सरपरस्त उनको साथ रख सकता है। (तक़रीरात राफ़ई)

इसीलिए हज़रत अनस (रज़ि0) से रिवायत है कि मैं ने और यतीम (यानि नाबालिग़ बच्चा) ने नबी करीम (स0अ0) के पीछे नमाज़ पढ़ी और उम्मे सलीम (रज़ि0) हमारे पीछे थीं। (मुस्लिम)

पता चला कि नाबालिग़ बच्चा सफ़ में शामिल हो सकता है। लेकिन औरतें हर हाल में पीछ रहेंगी। और अबू मालिक अश्अरी (रज़ि0) ने नबी करीम (स0अ0) की नमाज़ की कैफ़ियत बयान की और उसमें यह भी फ़रमाया: मर्दों ने सफ़ बनायी और उनके पीछे बच्चों ने सफ़ बनायी। (अबूदाऊद)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि0) की रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स0अ0) ने फ़रमाया: तुममें से बालिग़ और अक़्लमन्द (नमाज़ में) मुझसे मिलकर रहा करें, फिर उनके बाद वाले, फिर उनके बाद वाले। (मुस्लिम)

4– इमाम का बीच में रहना:

इमाम के लिये सुन्नत का तरीक़ा यह है कि वह बीच में खड़ा हो और उसके दायें और बायें मुक़्तदी बराबर हों। ऐसा न किया तो मकरूह होगा। (शामी)

इसलिये कि हज़रत अबूहरैरा (रज़ि0) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स0अ0) ने फ़रमाया: इमाम को बीच में करो और ख़ाली जगह भरो। (अबूदाऊद)

अगली सफ़ में जगह ख़ाली हो तो बाद में आने वाले शख़्स के लिये यह जायज़ है कि सफ़ में आगे से गुज़र जाये और ख़ाली जगह को पूरा कर दे। (शामी)

5– जब सफ़ में अकेला हो तो क्या कहे:

अगर मस्जिद इस हाल में पहुंचा कि अगली सफ़ें भर चुकी थीं, तो इस सूरत में उस शख़्स को चाहिये कि रुकूअ तक इन्तिज़ार करे ताकि अगर कोई आ जाए तो उसके साथ पीछे सफ़ बना सके। अगर रुकूअ तक कोई न आये तो अस्ल हुक्म यह है कि आगे वाली सफ़ से किसी मसला जानने वाले को पीछे ले आये और उसके साथ सफ़ बना ले। इससे उसकी नमाज़ ख़राब नहीं होगी। लेकिन बात यह है कि ज़्यादातर लोग इस बात को नहीं जानते हैं और ख़तरा यह होता है कि कहीं अपनी नमाज़ न ख़राब कर लें और कहीं ख़फ़ा न हो जायें। इसीलिए उलमा ने लिखा है कि इस तरह कि सूरतेहाल में अकेले भी पीछे खड़ा हो सकता है। (शामी)

अगर कोई व्यक्ति आया। उसे लगा कि सफ़ में जगह नहीं है। इसीलिए उसने पीछे नियत बांध ली फिर उसे नज़र आया कि आगे वाली सफ़ में जगह ख़ाली है तो बेहतर यही है कि अब वहीं खड़ा रहे लेकिन अगर वह चलकर आगे वाली सफ़ की ख़ाली जगह पूरी कर दे तो नमाज़ ख़राब नहीं होगी इसलिये कि हदीस शरीफ़ में मिल–मिल कर खड़े होने का जो हुक्म है यह उसी पर अमल कर रहा है। लेकिन यह इजाज़त सिर्फ़ एक सफ़ के लिये है अगर तीसरी सफ़ में जगह हो तो वहां जाने से नमाज़ ख़राब हो जायेगी। (शामी)

6– इक़्तिदा को रोकने वाली चीज़ें:

तीन चीज़ों में से कोई एक चीज़ पायी जाये तो इक़्तिदा करना सही नहीं होगा।

1– इमाम व मुक़्तदी के बीच कोई ऐसा रास्ता इत्यादि हो जिसमें से गाड़िया वग़ैरह गुज़र सकती हों।

2– इमाम व मुक़्तदी के बीच कोई ऐसी नहर या नदी हो जिसमें नाव इत्यादि चलती हो यानि जिसको पुल या नाव इत्यादि के बिना पार न किया जा सकता हो, लेकिन इन दोनों सूरतों में इक़्तिदा उसी वक़्त ठीक नहीं है जब जब सफ़ें आपस में मिली हुई न हों। यदि सफ़ें रास्ते पर भी बनी हुईं हैं तो और नदी पर पुल है और सफ़ें उस पर भी बनी हुईं हैं तो रास्ते और नदी के पार भी इक़्तिदा करना सही है।

3– बीच में औरतों की पूरी सफ़ हो तब भी औरतों के बाद वालों के लिये इक़्तिदा करना सही नहीं होगा।

शेष: भीख मांगना – मुस्लिम समुदाय .....

इस बात से और दुख होता है कि उनमें अच्छी ख़ासी संख्या हमारे मुसलमान भाइयों की भी है और जिस उम्मत (समुदाय) को सबसे बढ़कर त्याग की शिक्षा दी गयी है, वही इस व्यवहारिक बीमारी में आगे–आगे है।

इस्लाम से पहले बहुत से धर्मों में धार्मिक लोगों को रुपये कमाने की इजाज़त नहीं थी और उनका गुज़र–बसर इसी प्रकार होता था कि वे लोगों से मांगे और लोगों की नज़र व नियाज़ पर जीवन व्यतीत करें। हिन्दू भाइयों के यहां ब्राह्मणों के अधिकार में यह बात शामिल थी कि लोग उसे दान किया करें, बौद्ध धर्म में धार्मिक लोगों को और भक्तों को रुपया कमाने की मनाही है और वे लोगों की दक्षिणा पर जीवन व्यतीत करते थे। ईसाइयों के यहां जब सन्यास का विचार फैला तो न केवल धार्मिक मार्गदर्शक बल्कि जनता में भी सन्यासी लोगों ने इस बात को ज़रूरी समझा के वे पैसा कमाना छोड़ दें और लोगों के दिये हुए पर अपनी ज़िन्दगी गुज़ारें लेकिन इस्लाम ने पहले दिन ही से पैसा कमाने को ज़रूरी बताया, कुरआन ने कहा कि अल्लाह की बन्दगी से फ़ारिग़ होने के बाद पैसा कमाने की कोशिश करनी चाहिये और माल को अल्लाह के फ़ज़ल का नाम दिया। रसूलुल्लाह स0अ0 ने खुद तिजारत की, हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़, हज़रत उमर, हज़रत उस्मान और बड़े–बड़े सहाबा रज़ि0 ने तिजारत की। हज़रत अली रज़ि0 और बहुत से सहाबा ने मेहनत मज़दूरी करके अपनी ज़रूरतें पूरी कीं और रिज़्क़ के तलाश की तहसीन फ़रमायी गयी।

कल की दौलत आज की मुसीबत

जनाब शंकर अय्यर

देश की नक़दी अर्थव्यवस्था का बहुत बड़ा हिस्सा आज कागज़ों पर चल रहा है। यह कुछ भी हो सकता है, रबर की मुहर लगे कार्डबोर्ड के टुकड़े से लेकर कोई कागज़ की पर्ची तक। मिज़ोरम के ख़वाबंग गांव के ग्रामीणों ने भी अपनी करेंसी ईजाद कर ली है, जिसका वे कभी भी इस्तेमाल कर सकते हैं, यह सातवीं सदी के चीन के तंग वंश के समय के इकरारनामे जैसा कुछ है।

ग्रामीण भारत के कई हिस्सों में दूधवाले, सब्ज़ी वाले और पोल्ट्री वाले कागज़ की पर्ची या फिर ज़ुबानी वायदे से काम चला रहे हैं। वहीं ऐसे भी लोग हैं जो अपनी व्यथा को बयान करने तक की स्थिति में नहीं हैं। मुबारकपुर और वाराणसी के बुनकर, आगरा और कानपुर के चमड़ा कारोबार से जुड़े श्रमिकों और सूरत तथा तीरपुर जैसे छोटे औधोगिक शहर के श्रमिकों को बिना पारिश्रमिक के काम चलाना पड़ रहा है। हालत यह है कि औधोगिक इकाइयों में भी काम ठप है।

नकदी के संकट को समझाने के लिये ज़रा इस पर विचार कीजिए। वर्ष 2015–16 के दौरान निजी खपत पर कुल 80 लाख करोड़ रुपये खर्च किये गये थे, जबकि सकल घरेली उत्पाद (जीडीपी) 135 लाख रुपये था। यह सब नक़दी में नहीं था। मगर यह जगजाहिर है कि अनौपचारिक अर्थव्यवस्था का 45 प्रतिशत नक़दी से चलता है। दस रुपये में से आठ रुपये जाम होने से अर्थव्यवस्था ठहर गयी है।

नोटबंदी का लक्ष्य बड़ी मछलियों को पकड़ना था, मगर इसने घरों, छोटे कारोबारों और किसानों की रोज़ाना की अर्थव्यवस्था को पटरी से उतार दिया है। नोटबंदी का यह दौर ऐसे समय में आया है जब बेहद व्यस्त मौसम है। रबी का मौसम शुरू हुआ है और किसान बीज–खाद लेकर अन्य ज़रूरी कामों के भुगतान के लिये संघर्ष कर रहे हैं। यह भवन निर्माण का भी मौसम है, जो कि नकदी पर आधारित है। यह प्रवासी अकुशल मज़दूरों के रोज़गार तलाशने का मौसम है और शादियों का मौसम भी है।

ऐसा लगता है कि नौकरशाहों (ब्यूरोक्रेट्स) ने मांग और आपूर्ति के बीच खाई पर बिल्कुल भी ग़ौर नहीं किया। कुल 23.3 नोटों को चलन से बाहर किया गया है। यह मानकर कि चलन के कुल नोटों में से बीस प्रतिशत काला धन है और यह नष्ट हो जाएगा, सरकार को 18.6 अरब नोटों को बदलना होगा। भारत में नोटों को छापने की कुल क्षमता अभी 27 अबर नोट सालाना है, जिसमें दस, बीस, पचास और सौ रुपये के 15 अरब नोट भी शामिल हैं। यदि पूरी क्षमता का उपयोग किया जाए तो हर महीने केवल 2.3 अरब नोट ही छापे जा सकते हैं। अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि 18 अरब से अधिक नोटों की छपाई में कितना समय लगेगा।

नोटों की छपाई के बाद लोगों तक उनके पहुंचने में भी वक़्त लगता था। भारत में 5,93,731 आबाद गांव, 4041 शहर, 3894 बस्तियां और 1456 अन्य रिहायशी शहरी जगहें हैं। देश की कुल 131 करोड़ आबादी की सेवा करने के लिये बैंकों की 1.34 लाख शाखाएं हैं। बेशक 2.02 लाख एटीएम हैं, लेकिन उनमें से सिर्फ़ 1.10 लाख ही काम कर रहे हैं। इसमें 1.5 लाख डाकघरों और बैंक के बिज़नेस सहयोगियों को जोड़कर देश की वित्तीय स्थिति (थ्पदंदबपंस च्वेपजपवद) का अंदाज़ा लगाया जा सकता है।

ग्रामीण भारत की अर्थव्यवस्था नक़दी पर चलती है और वहां 84 करोड़ लोगों के लिये बैंकों की सिर्फ़ 50 हज़ार शाखाएं हैं। उत्तर प्रदेश की आबादी 20 करोड़ है जिसमें 15 करोड़ लोग 97,942 गावों में रहते हैं, उनके लिये 16,692 शाखाएं हैं, जिनमें से नौ करोड़ के क़रीब 39,015 गांवों में रहेते हैं, जहां 6621 शाखाएं हैं, जिनमें से 3037 शाखांए ग्रामीण क्षेत्रों में और 1984 अर्ध शहरी क्षेत्रों में है। मांग और आपूर्ति के गणित को देखने के बाद क्या इस स्थिति को बेहतर कहा जा सकता है।

पूरे देश में तीन बातों पर सहमति है। पहला, नोटबंदी का लक्ष्य सराहनीय है। दूसरा, इस पर अमल भयावह है। और तीसरा, मध्य अवधि में अर्थव्यवस्था को धक्का पहुंचेगा। लोगों को परेशानी हो रही है। निश्चित रूप से जवाबदेही को लेकर बहस होगी। दोषारोपण भी होंगे, मगर अभी उपलब्धता और आवश्यकता के बीच अन्तर को कम करने की आवश्यकता है। यहां कुछ सुझाव है जिनपर विचार किया जा सकता है:

विशेषज्ञों की सलाह लें: शीर्ष बैंकरों, मोबाइल जगत के दिग्गजों, टेक गुरूओं, खुदरा (ई कामर्स और शेयर इकोनॉमी सहित) के विशेषज्ञों से विशिष्ट तरह के समाधान के लिये सुझाव लिये जाने चाहिये।

भूख की चुनौती से निपटें: भारत के पास अनाज का चार करोड़ टन का बफर स्टॉक है। राज्य सरकारों को जनवितरण प्रणाली से ग़रीबों में इसे उधार या मुफ़्त वितरण करने के लिये कहा जाए।

रबी की बुआई: किसानों को बीच और अन्य ज़रूरतों के लिये पुराने नोटों का इस्तेमाल करने दें।

नोटों की छपाई विदेश में भी हो: विदेशों में भी नोटों की छपाई हो सकती है। 1997–98 के दौरान अमरीका, बिट्रेन और जर्मनी से नोट छपवाए जा चुके हैं।

प्रीपेड प्लास्टिक करेंसी: विभिन्न तरह की मुद्राओं में प्रीपेड रुपे कार्ड जारी किये जाएं, जिन्हें मोबाइल फ़ोन कूपन की तरह रिचार्ज किया जा सके।

आधार बैंक बनाएं: भारत में आज सौ करोड़ आधार रजिस्ट्रड हो चुके हैं और सौ करोड़ के करीब मोबाइल फ़ोन हैं। आधार नम्बर को एकीकृत भुगतान इंटरफ़ेस के ज़रिये 12 अंकों के बैंक खाते में बदला जाए ताकि दूर–दराज़ के क्षेत्रो में भी लेन–देन किया जा सके।

यह केवल कुछ सुझाव हैं, मुद्दा यह है कि अर्थव्यवस्था को बंद नहीं किया जा सकता। सरकार को व्यवस्था से बाहर भी समाधान तलाशना चाहिये। नकदी के संकट को जल्द नहीं दूर किया गया तो मुश्किलें और बढ़ सकती हैं।

शेषः तौहीद क्या है?

..... कुरआन मजीद में उन्हीं ग़लत अक़ीदों पर ज़रब लगाते हुए साफ़ तौर पर कह दिया गया कि उपासना व इबादत के सभी रूप सिवाए अल्लाह के किसी और के लिये अपनाना जायज़ नहीं, तमाम इनसानों का माबूद वही अल्लाह है, वह बड़ा मेहरबान और बहुत ही रहम वाला है।

"वही अल्लाह है उसके सिवा कोई माबूद नहीं, वही जीता है और सब उसके सहारे जीते हैं, न उसको ऊंघ आती है और न नींद।" (बक़राः 255)

इस आयत में शिर्क करने वालों के इस अक़ीदे को ग़लत साबित कर दिया गया, जिसमें वे यह समझते थे कि अल्लाह तआला ने दुनिया बनायी, कायनात का सारा निज़ाम बनाया, और सबकी निगरानी दूसरों के सुपुर्द कर दी, "हयि व क़य्यूम" की सिफ़त बयान फ़रमाकर यह साफ़ कर दिया गया कि अल्लाह तआला की तरफ़ ऐसी नामुनासिब बाते जोड़ना कोई माने नहीं रखता। अस्ल निगरानी करने वाली और ज़िन्दा रहने वाली ज़ात अल्लाह तआला की ही है। उसी के हाथों में सबकुछ है, वह जो चाहे कर सकता है, किसी भी निज़ाम में एक लम्हे के लिये कोई उसका शरीक नहीं, क्योंकि कायनात के निज़ाम को चलाने के लायक़ वही ज़ात हो सकती है, जो हमेशा के लिये ज़िन्दा हो, वह कभी फ़ना न हो, नींद और ऊंघ का उसके पास गुज़र तक न हो और ऐसी ज़ात सिवाए अल्लाह के कोई नहीं। मानो उपरोक्त आयत में इसी की सिफ़त बयान करके शिर्क करने वालों के उन सभी अक़ीदों को रद्द कर दिया गया, जिनमें यह बात शामिल थी कि अल्लाह तआला आसमान व ज़मीन बनाने के बाद थक गया या उसको भी आराम की ज़रूरत पड़ती है, या निज़ाम–ए–कायनात चलाने में उसके साथ दूसरे लोग भी शामिल हैं। कुरआन मजीद की इन खुली हुई शिक्षाओं के बाद भी यह उचित नहीं कि वह अल्लाह की ज़ात में किसी को शरीक करे, किसी और को कायनात के कामों में दख़ल देने का हक़दार समझे, ख़ुदा के अलावा किसी को बन्दगी के लायक़ समझे।

पश्चिमी अश्लीलता का दौर

मौलाना यहया नोमानी

शायद इस समय जिस चीज़ का सबसे अधिक प्रचार किया जा रहा है वह "नारी स्वतन्त्रता" और "पुरूष व स्त्री की समानता" जैसे नामों से जाना जाने वाला वह प्रचार है जिसका ध्वजवाहक पश्चिम है। जिसका सार यह है कि नारी की सुन्दरता व उसके शरीर को पुरुष हेतु आनन्दप्राप्ति का सस्ता और सुलभ सामान और व्यापारी के लिये बेचने का माल बनाना है। पश्चिम ने अन्तर्राष्ट्रीय वर्चस्व को इस प्रकार के नारों का प्रचार करने के लिये हर प्रकार से इस्तेमाल किया है। अब इस बारे में पूरी दुनिया लगभग–लगभग पश्चिमी विचारों का समर्थन करने लगी है। हमारा ज़माना अपनी बेहयाई व दुषचरित्रता के एतबार से अकेला दौर है। मानवीय समाज में पहले भी अश्लीलता व निर्लज्जता पायी जाती थी किन्तु वह एक बुराई ही समझी जाती थी। निर्लज्ज स्त्री–पुरूष अश्लील काम करते थे। उनकी संख्या कभी–कभी बढ़ भी जाती थी। किन्तु निर्लज्जता कभी नाम व ख्याति का साधन और समाज में स्थान पाने का साधन नहीं हो सकती थी और न कभी इसको एक सभ्यता व कल्चर का स्थान दिया गया था।

सदक़े जाइये रसूलुल्लाह स0अ0 पर, आपने एक ईसाइ नवमुस्लिम राजा से कहा थाः निंसदेह ईसाइ पथभ्रष्ट हैं और यहूदी खुदा की फिटकार व लानत के शिकार.....इन्हीं ईसाइ और यहूदियों ने मानवता को ऐसी गुमराहियां और लानतों में डाल दिया है कि अश्लीलता व निर्लज्जता स्वयं में एक सभ्यता व संस्कृति बन गयी है बल्कि इसके बढ़ते हुए असर के सामने मानवीय सभ्यताएं सर झुकाएं हैं।

रसूलुल्लाह स0अ0 ने अपनी एक हदीस में इस बात को स्पष्ट भी किया था कि मेरी उम्मत पर मेरे बाद जो फ़ित्ने और संकट आएंगे उनमें अश्लीलता व निर्लज्जता का संकट सबसे भयावह और दीन व ईमान के लिये हानिकारक होगा। रसूलुल्लाह स0अ0 ने फ़रमाया थाः

अब हम रसूलुल्लाह स0अ0 की भविष्यवाणी की सच्चाई को स्वयं अनुभूत कर रहे हैं और न जाने आगे क्या–क्या सामने आने वाला है?!

मुसलमानों के अतिरिक्त दुनिया का कोई गिरोह और कोई समुदाय इस संकट और फ़साद के समय में इस बलाख़ेज़ सैलाब के सामने बांध बांधने या कम से कम स्वयं को सुरक्षित करने की चिन्ता नहीं कर रहा है। केवल ईमान वाले हैं जिनको अल्लाह ने अन्तःदृष्टि दी है और निर्देशित किया है जो इस फ़ित्ने की दुनिया में भी तबाही और आख़िरत (परलोक) में इसके भयावह परिणाम को समझते हैं।

किन्तु मनुष्य के लिये विपरीत लिंग के प्रति आकर्षण उसकी बड़ी कमज़ोरी है, जिनके जाल में शैतानों के लिये उसको फांसना आसान रहा है। उस पर भी यह कि इस समय तो अश्लीलता व चरित्रहीनता और निर्लज्जता व वेश्यावृति ने पूरी दुनिया में इस समय के सबसे बड़े प्रचलित कल्चर व फ़ैशन का स्थान प्राप्त कर लिया है। जिसका प्रचार–प्रसार दुनिया में सबसे तत्परता के साथ किया जाने वाला मिशन बन चुका है। विकसित देशों की शिक्षा, सभ्यता, संस्कृति, मीडिया, कला और आर्ट का केन्द्रीय बिन्दु यही गन्दगी ही तो है। स्कूलों में इसी का कल्चर है, यूनिवर्सटियों में इसी का चलन है, बुद्धिजीवी वर्ग में यही सिद्धान्त पढ़ाया जाता है, मीडिया का हर दृश्य, अख़बारों का हर पन्ना अपने बैनस्सुतूर में इसी प्रकार के भड़काऊ व आवेशात्मक मिशन का सेवक है। स्वार्थी और पैसे की पुजारी कम्पनियां भी इसी आग में अपने व्यापार को गर्म करने में क्यों न एक–दूसरे से आगे बढ़ने का प्रयास करतीं?!

मुसलमानों को सोच–समझकर अपनी और अपनी नस्लों के जीवन के बारे में निर्णय लेना चाहिये। आप पश्चिम की कहां तक पैरवी करेंगे?नारी स्वतन्त्रता के नाम पर औरतों को बेचने की जिस नीच हदों तक पश्चिमी सभ्यता जा चुकी है उससे तो हर एक को दुर्गंध आनी चाहिये। पश्चिमी देशों हर "सभ्य" शहर में औरत फ़रोशी के विशेष प्रदर्शन "टॉप लेस कार वाश" (ज्वच स्मे बंत ो) की दुकानें हैं। यानि आपको अगर कार धुलवाना है तो आइये। कुछ पैसे दीजिए, यह काम निर्वस्त्र लड़कियां करेंगी।

क्या आप यहां तक पहुंच जाने के लिये तैयार हैं। यदि आपके अन्दर पश्चिमी सभ्यता के प्रति आकर्षण है तो जान लीजिये आप उसकी रोशन ख़्याली नहीं तारीक अक़्ली और वैचारिक ग़ुलाम हैं जो आपको पश्चिम की दीवाना बना रही है।

इस सभ्यता में औरत का इतना शारीरिक शोषण किया जाता है कि वह अन्त में आत्महत्या ही करती है। वे लोग जो इस धोखे का शिकार हैं कि यह सभ्यता "वोमेन इम्पावरमेन्ट" (वउमद म्उचवूमतउमदज) की सभ्यता है। यहां आकर वे हैरान रह जाते हैं। अभी कुछ दिन पहले की बात है एक विख्यात भारतीय नायिका ने आत्महत्या कर ली। उसके पास दौलत, शोहरत और वह सबकुछ था जिसका लोभ पश्चिमी सभ्यता दिया करती है। ख़बर आयी कि आत्महत्या का कारण अपने पार्टनर (न कि पति) का अत्याचार था। हमारे देश में फ़िल्मी दुनिया का एक बड़ा नाम 'महेश भट्ट' का हुआ करता है। इस आत्महत्या के बाद उन्होंने साफ़ तौर पर क़ुबूल किया है कि "बाहर से चाहे कुछ नज़र आता हो मगर दर्दनाक हक़ीक़त यही है कि फ़िल्मी दुनिया में लगभग सभी नायिकाओं के साथ घरेलू नौकरानियों से भी बदतर सुलूक किया जाता है। एक समय था जब मैं समझता था कि औरत यदि आर्थिक रूप से मज़बूत होगी तो मर्द के ज़ुल्म से आज़ाद हो जाएगी। मगर यह बात ग़लत थी। मैंने "इन्टरटेनमेन्ट इन्डस्ट्री" में बहुत सी ऐसी औरतों को देखा है जिनके पास बहुत दौलत थी मगर व्यक्तिगत जीवन में उन्हें ऐसे शोषण व अत्याचार और अपमान का सामना करना पड़ता था जिसका सामना किसी घरेलू नौकरानी को भी नहीं करना पड़ता होगा। और यह सब बर्दाश्त करने पर मजबूर होती हैं।"

पश्चिमी सोच के अनुसार फ़िल्मी दुनिया औरतों की आज़ादी और औरतों की उन्नति की सबसे ऊंची चोटी है और उस पर यह जन्नत रूपी जहन्नम आबाद है। क्या हम भी अपनी अगली नस्लों को यह तबाह व बर्बाद भविष्य देना चाहते हैं?

हम तो एक ग़ैरमुस्लिम बहुसंख्यक देश में रहते हैं। खुद मुस्लिम समाज में भी यह सैलाब या तो दीवारों को तोड़कर घरों में घुस चुका है या फिर दीवारों पर टक्कर मार रहा है। ऐसी स्थिति में ईमानवालों के लिये भी अपने व्यवहारिक नियमों और दीनी हुक्मों की पाबन्दी और उन पर दृढ़ रहने को बहुत मुश्किल बना दिया है। जब कोई बुराई बहुत आम हो जाती है तो दिलों में उसके बुरे होने का असर भी बहुत कम हो जाता है। इस बात में भी यही हो रहा है। इसलिये बड़ी ज़रूरत इस बात की पैदा हो गयी है गयी है कि अल्लाह और उसके रसूल ने इस बारे में जो मार्गदर्शन दिया है उसको याद किया जाये और अपने तौर–तरीक़े को उस स्तर पर रखा जाये। यही शरीअत की मांग है और यही गुमराही व दुनिया और आख़िरत दोनों से बचने का रास्ता है।

बड़ी–बड़ी आरज़ुओं को दिल में जगह देना

दुनिया में बहुत से ऐसे लोग हैं जो इच्छाओं के दलदल में फंस कर रह जाते हैं और तौबा की फ़ुरसत उनके हाथों से चली जाती है। जैसा कि हज़रत अली रज़ि० ने कहा है: उन लोगों में न हो जाओ जो बड़ी–बड़ी आरज़ुओं की वजह से तौबा को छोड़ देते हैं। अस्ल में बड़ी–बड़ी इच्छाएं रखना अल्लाह की निगाह में एक अप्रिय काम है जिसकी मआरिफ़ुल इस्लामी में सख़्त निंदा की गयी है। हज़रत अली नहजुल बलाग़ा में 'बड़ी–बड़ी आरज़ुओं को आख़िरत भूलने का ज़रिया बताते हैं। बस अगर कोई आख़िरत को भुला दे तो गुनाह से परहेज़ और उस पर तौबा का तसव्वुर ही नहीं पाया जाता।

नोटबंदी का दूसरा पक्ष

केंद्र सरकार ने काले धन पर चोट करने की प्रतिबद्धता के तहत पांच सौ और हज़ार के नोटों को चलन से बाहर किया है, पर इस फ़ैसले के बाद से पुराने बड़े नोटों को खपाने की और नए नोटों की जमाखोरी के जो मामले सामने आए हैं, वे सरकार के इरादों को पलाते लगाने वाले प्रतीत होते हैं। अव्वल तो शुरूआती करीब एक पखवाड़े तक पुराने को बैंकों में बदलने की जो कवायद हुई, उसी में लोगों ने एक हद तक काले धन को सफ़ेद बना लिया लेकिन चूंकि इसमें नोट बदलने की एक सीमा थी, इसलिए लोगों ने ग़रीब और आम लोगों के जन–धन खाते में काला धन जमा करना शुरू कर दिया। थोड़े दिनों पहले तक जिन जन–धन खातों के रख–रखाव में ख़ुद बैंकों को पैसा ख़र्च करना पड़ता था, हाल के दिनों में ही इनमें अचानक अगर हज़ारों–लाखों रुपये जमा हो गये, तो यह बेवजह नहीं है। इसके ब्योरे हैं कि कई जगह पर गरीब लोगों ने अपना बैंक खाता उन लोगों को कुछ कमीशन पर भाड़े पर दिया, जो इनमें अपना काला धन रखना चाहते थे। पिछले दिनों नागालैंड के पूर्व मुख्यमंत्री नेफ्यू रियो के दामाद को साढ़े तीन करोड़ रुपये की नक़दी के साथ जिस तरह गिरफ़्तार किया गया, वह तो अमीरों द्वारा अपने ग़ैर क़ानूनी धन को क़ानूनी बनाने के लिये चोर दरवाजे तलाश करने का एक और आश्चर्यजनक उदाहरण है। दरअसल पूर्वोत्तर के राज्यों में कुछ जनजातियों को पूरी तरह आयकर से छूट मिली हुई है यानि यदि वे अपने बैंक खातों में ढ़ाई लाख से अधिक भी जमा करते हैं, तो उनसे किसी तरह की पूछताछ नहीं होने वाली। ज़ाहिर है, इसी छूट का फ़ायदा उठाकर पैसा नागालैंड भेज दिया गया। पुराने नोटों को ठिकाने लगाने की तरह नये नोटों की जमाखोरी के भी कई मामले सामने आए हैं। नोटबंदी के तत्काल बाद आतंकवादियों के पास दो हज़ार रुपये के नये नोट पाए गये, जो बताता था कि बहुत कुछ नहीं बदला है। गुजरात के अहमदाबाद में एक परिवार के तीन सदस्यों से क़रीब साढ़े बारह लाख की नक़दी बरामद हुई, जिनमें लगभग साढ़े दस लाख रुपये दो हज़ार के नये नोट में थे। सौ के नोट की जमा खोरी के भी कई मामले सामने आए हैं। साफ़ है कि जिस उद्देश्य के साथ बड़े नोटों को चलन से बाहर किया गया है, उसे सार्थक करने के लिये मुस्तैदी की ज़रूरत है।

नोटबंदी से संबंधित सरकार की 'तैयारियों' की पड़ताल

8 नवम्बर का फ़रमानः

सरकार ने ऐलान किया कि 10 से 24 नवम्बर 4 हज़ार रुपये के पुराने नोट किसी भी बैंक में बदले जा सकते हैं। बाद में इस राशि में बढ़ोत्तरी होगी।

फ़ैसला बदला गयाः

12 नवम्बर को कहा गया कि गया कि नोट बदलने की अवधि केवल 22 नवम्बर तक है।

15 नवम्बर को कहा गया कि एक व्यक्ति केवल एक ही बार नोट बदल सकता है जबकि 8 नवम्बर को इस प्रकार का कोई आदेश नहीं दिया गया था। इसके लिये आदेश दिया गया कि नोट बदलवाने वालों के हाथों में चुनाव के समय प्रयोग की जाने वाली स्याही लगायी जाएगी।

17 नवम्बर को कहा गया कि अब केवल 2 हज़ार रुपये ही बदलवाए जा सकेंगे।

18 नवम्बर को इस पर एक और पाबन्दी लगा दी गयी। इस आदेश के अनुसार अब केवल अपने ही बैंक से नोट बदलवाए जा सकेंगे। .....(शेष पेज 19 पर)

साम्यवाद और इस्लाम

डॉक्टर मुहम्मद मुस्तफ़ा अस्सबाई (रह०)

जब किसी व्यवस्था की श्रेष्ठता व वर्चस्व तुलना द्वारा दलील से साबित करने की कोशिश, दिलों पर ज़ंग लग जाने और ज़हन व दिमाग पर पक्षपात का पर्दा पड़ जाने के कारण सामने न आ सके तो उस व्यवस्था के परिणामों व प्रभाव पर सच्चे इतिहास के फ़ैसले को कोइ रद्द नहीं कर सकता, चाहे दूसरा पक्ष अपनी नफ़रत में कितनी ही सरकशी अपना लें।

इस्लाम साम्यवाद के फ़ायदों और प्रभाव को जैसा कि इतिहास की सच्ची घटनाओं से साफ़ है, हमने उसके देश व समाज व व्यक्ति में देखा है, यह किस प्रकार के प्रभाव थे?इस्लामी समाजवाद ने अरबों से पतन की ओर ले जाने वाली वंशवाद, क़बीले का बिखरावपूर्ण जीवन, मेहनत और अशांति, अलगाव और अकेलापन लेकर उन्हें बुलन्द व अज़ीम तौहीद, ख़ुशहाल ज़िन्दगी, क़ौमी एकता और ऐसा नेतृत्व दिया जो पूरे मानवीय इतिहास में नूर व हिदायत के फ़ैलने का साधन बना।

इस्लामी साम्यवाद ने पूरी दुनिया से ग़लत अक़ीदे, ज़ालिम बादशाहत, जंगजू हैवानियत लेकर आज़ाद अक़ीदा, जागरुक नेतृत्व, शराफ़त व भलाई से भरपूर इनसानियत अता की। अरब से अबूजहल को लेकर अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि0) जैसा महान ख़लीफ़ा दिया, इराक़ को रुस्तक के बदले साद बिन अबी वक़्क़ास जैसा जरनल दिया, मिस्र को मकोक़स के मुक़ाबले अम्र बिन आस जैसा विजयी दिया, शाम से हरक़िल को लेकर मुआविया को जन्म दिया, दुनिया के नेतृत्व से क़ैसर व किसरा को हटाकर ख़ालिद व उमर जैसा सिपहसालार दिया। इसी तरह दुनिया से दो साम्राज्यों का ख़ात्मा किया, जिन्होंने क़ौमों को मौत के घाट उतारा, यानि फ़ारस का साम्राज्य पूर्व में और रोमन इम्पायर पश्चिम में।

इस्लामी साम्यवाद ने दुनिया को ऐसी सभ्यता दी जिन्होने पूर्व के बुतपरस्त और पश्चिम के वहशी क़बीलों को नींद से जगा दिया। यह सभ्यताएं पूर्व में बग़दाद और पश्चिम में क़ुर्तुबा की सभ्यता कहलाती हैं। यह तो हैं कुछ वे फ़ायदे व प्रभाव जो इस्लामी साम्यवाद के कारण प्राप्त हुए हैं। इसकी तुलना में कम्युनिस्टों के साम्यवाद के परिणाम पर नज़र डालिये, मैं यहां इससे बहस नहीं करना चाहता हूं कि हमारे देश अरब को छोड़कर उसके अपने देश में क्या परिणाम सामने आए हैं?मैं यहां केवल अबर में इसके परिणामों की चर्चा करना चाहता हूं, जिनका हम सब अुनभव करते रहे हैं। साम्यवाद का ही नतीजा है कि अरब में फ़साद, ख़यानत, साज़िश ने जन्म लिया

साम्यवाद यह चाहता है कि अरबी उम्मत की एकता छीनकर उसमें बिखराव पैदा कर दे।

साम्यवाद की यह कोशिश है कि अबरी उम्मत की सामूहिकता का शिराज़ा बिखेर कर उसे अलग–अलग क़ौमों में बांट दे जिससे उनमें आपस में नफ़रत का बीच उगे।

साम्यवाद की यह भी चाहत है कि अरब क़ौम से उसका दीन और उसकी अरबियत को ख़त्म करके उसे इल्हाद व क़ौमियत के फन्दे में डाल दे।

उसका यह मिशन है कि अरब क़ौम से उसकी मर्दाना विशेषता और ख़ूबियों को छीनकर उसमें कम हिम्मती, निफ़ाक़ का मरीज़ बना दे।

साम्यवाद चाहता है कि अरबों के नेतृत्व और उसकी दृढ़ता को नेस्त व नाबूद करके उसे ख़बीस साम्राज्यवाद के काफ़िले में मिला दे, जो नामुराद इनसानियत के बारीक पर्दे में छिपा हुआ है।

साम्यवाद चाहता है कि मुसलमानों की एकता और उसका अस्ल जौहर छीन ले ताकि उसे ऐसे क़ौमों में बांट दे जो एक दूसरे की दुश्मन हों और ऐसी गिरी हुई हरकतों में डाल दे जो उनकी ख़ूबियों को ख़त्म कर दे।

वह अरब और मुसलमानों की ताक़त पर ग़लबा हासिल कर लेना चाहती है ताकि उनको कमज़ोर कर दे और उसका मक़सद है कि मुसलमानों की आज़ादी और खुदमुख़्तारी छीनकर उन्हें साम्राज्यवाद के अधीन कर दें।

साम्यवाद चाहता है कि इस्लामी मश्रिक अरबी से दुख की मारी इनसानियत के लिये उसने नयी सभ्यता की जो बुनियाद डाली है, जिसकी इनसानियत मोहताज है, बिना किसी क़ानून और जवाज़ के तेज़ी से खींचकर ऐसी पस्ती की तरफ़ ढ़केलने वाली ऐसी गंदी सभ्यता के हवाले कर दें जो दम तोड़ रही है।

साम्यवाद का अन्तिम प्रयास यह है कि मुसलानों को मुहम्मद स0अ0 के नेतृत्व से हटाकर इब्लीस के मार्ग पर डाल दें।

कितना अन्तर है इस्लामी साम्यवाद और उसके तोहफ़े में और कम्यूनिस्ट साम्यवाद और उसकी हलाकत खेज़ियों में। दोनों में बहुत बड़ा फ़र्क यही साफ़ हो जाता है।

यहीं पर मालूम हो रहा है कि वफ़ा–जफ़ा से है कितनी आगे:

तो क्या दोनों आलोचनात्मक स्तर पर बराबर हो सकते हैं?और क्या अक़्ल में समान स्थान प्राप्त कर सकते हैं। और क्या दोनों अपने इनसानी और तहज़ीबी नतीजे में बराबर हैं। कुरआन का इरशाद है:

"भला एक जो ईमान पर है बराबर है उसके जो नाफ़रमानी पर है?नहीं बराबर होते।" (सूरह सज्दा: 18)

"कह दीजिए क्या बराबर होता है अंधा और देखने वाला या कहीं बराबर है अंधेरा और उजाला।" (सूरह रअद: 16)

"तो कह दीजिए कि बराबर नहीं नापाक और पाक और अगरचा तुझको भली नापाक की कसरत" (सूरह माइदा: 100)

"और बराबर नहीं ज़िन्दा और न मुर्दे, अल्लाह सुनाता है जिसको चाहे।" (सूरह फ़ातिर: 22)

"मिसाल उन दोनों फ़िरक़ों की जैसे एक अंधा और बहरा और दूसरा देखता और सुनता, क्या बराबर है दोनों का हाल, फिर क्या तुम ग़ौर नहीं करते।" (सूरह सज्दा: 18)

प्रिय पाठक! इस्लामी साम्यवाद रब्बानी है अपनी पवित्रता में, मुहम्मदियत है अपने नेतृत्व में, अरबियत है अपनी विशेषताओं में, इनसानियत है अपने रूझान में, आलमी है अपने पैग़ाम में।

यही कारण है कि इस्लामी साम्यवाद अरब और सभी मुसलमानों के लिये एक रूह परवर पैग़ाम है और सीधी राह है और साम्यवादियों का साम्यवाद हमारे लिये ज़िल्लत व फ़साद व बिखराव का पेश ख़ेमा है।

और यही कारण है कि इस्लामी साम्यवाद की दावत व प्रचार मानवता की महान सेवा है, ग़ल्बा क़ौमियत के लिये, और कम्यूनिस्ट साम्यवाद खुला हुआ जुर्म है।

शेष: नोटबंदी का दूसरा पक्ष

8 नवम्बर का आदेश

11 नवम्बर तक सरकारी अस्पताल, पेट्रोल पम्प, एयर टिकटों की ख़रीददारी, रेलवे स्टेशन, सरकारी बसों, और मेडिकल स्टोर पर पुराने नोट इस्तेमाल किये जा सकेंगे।

फ़ैसला बदला गया

11 नवम्बर को इसकी अवधि बढ़ार 14 नवम्बर कर दी गयी।

14 नवम्बर को एक बार फिर इसकी अवधि बढ़ाई गयी और बढ़ाकर 24 नवम्बर तक कर दी गयी।

लेकिन इन सभी जगहों पर पुराने नोट न लिये जाने की शिकायत आम रही और जहां कुबल भी किये गये इस शर्त पर कि पूरे राशि का सामान लेना होगा यानि फुटकर पैसे वापस नहीं दिये जाएगें।

13 नवम्बर का फ़रमान

वित्त मंत्रालय ने ऐलान किया कि एटीएम से ढ़ाई हज़ार रुपये निकाले जा सकेंगे।

फ़ैसला बदला गया

लेकिन इस पर अमल नहीं हो सका। आज भी एटीएम पर सिर्फ़ दो हज़ार रुपये मिल रहे हैं, बल्कि बहुत सी जगहों पर नोटों की क़िल्लत को ध्यान में रखते हुए केवल एक–एक हज़ार रुपयों पर ही संतोष करना पड़ा।

17 नवम्बर का आदेश:

जिन घरों में शादी है, उन्हें ढ़ाई लाख रुपये निकालने तक की आज़ादी है। लेकिन इस बारे में बैंकों को कोई आदेश नहीं दिया गया, जिसकी वजह से इस पर कोई अमल नहीं हो सका।

फ़ैसला बदला गया

21 नवम्बर को कहा गया कि यह राशि केवल उन्हें मिल सकेगी जो यह साबित करेंगे कि वे शादी में ढ़ाई लाख रुपयें से अधिक ख़र्च करने वाले हैं। यह भी कहा गया कि वे अपने ख़र्चों के बिल जमा करें।

शफ़ाअत-ए-रसूल (स०अ०)

मुहम्मद अरमुग़ान बदायूनी नदवी

हदीसः "हज़रत अली रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल स०अ० ने इरशाद फ़रमायाः मैं अपनी उम्मत की सिफ़ारिश करूंगा, यहां तक कि मेरा रब मुझे पुकारेगा और कहेगाः ऐ मुहम्मद! क्या तुम ख़ुश हो गये?मैं कहूंगाः हां! मैं ख़ुश हो गया।" (कन्ज़ुल उम्मालः 39758)

फ़ायदाः शफ़ाअत मुस्लिम उम्मत के लिये अल्लाह तआला की तरफ़ से एक बड़ा तोहफ़ा है। क़यामत के दिन जब नफ़्सी–नफ़्सी का आलम होगा, कोई किसी की मदद करने वाला नहीं होगा, भाई–भाई को नहीं पहचानेगा, और बेशुमार लोगों को उनके आमाल के मुताबिक़ जहन्नम भेजा जा चुका होगा, उस वक़्त रसूलुल्लाह स०अ० को अल्लाह तआला की तरफ़ से शफ़ाअत की इजाज़त मिलेगी, और आप स०अ० की शफ़ाअत से बहुत से लोगों को जहन्नम से आज़ादी नसीब होगी।

रसूलुल्लाह स०अ० की शफ़ाअत के बहुत से रूप होंगे, जिनको रिवायत की रोशनी में समझा जा सकता है। पहली सूरत तो आम शफ़ाअत की होगी, जिसमें तमाम इनसानियत दूसरे नबियों से मिलने के बाद आप स०अ० के सामने पहुंचेगी, और आप स०अ० उनकी सिफ़ारिश करेंगे। दूसरी शफ़ाअत उस वक़्त होगी जब लोग पुल सरात पर से गुज़र रहे होंगे, हदीसों से मालूम होता है कि आप स०अ० की उस वक़्त की सिफ़ारिश से बहुत से लोगों को गुज़रना आसान हो जाएगा। तीसरी शफ़ाअत उस वक़्त होगी जब बहुत से ईमान वालों को उनके गुनाहों से पाक करने के लिये जहन्नम में डाला जाएगा। रसूलुल्लाह स०अ० उनकी भी सिफ़ारिश करेंगे और क्रमशः उन सबको जहन्नम से आज़ादी नसीब होगी। इसके अलावा रिवायतों से यह भी मालूम होता है कि आप स०अ० बहुत से काफ़िरों और मुश्रिकों के बारे में भी शफ़ाअत करेंगे तो उनको जहन्नम की गहराइयों से निकालकर उसकी ऊपरी सतह में कर दिया जाएगा और उनके अज़ाब में कुछ कमी हो जाएगी। सही मुस्लिम में आप स०अ० के चचा अबू तालिब के बारे में यह रिवायत मौजूद है।

यहां यह साफ़ कर देना ज़रूरी है कि अल्लाह तआला के सभी फ़ैसले नाफ़िज़ होने वाले हैं, अलबत्ता अल्लाह के बहुत से फ़ैसलों के लागू होने में रसूलुल्लाह स०अ० की शिफ़ाअत का तरीक़ा अपनाया जाएगा, जिसके नतीजे में बहुत से लोगों को जहन्नम से छुटकारा नसीब होगा, वरना अगर कोई यह समझता हो कि अल्लाह के फ़ैसले एक तरफ़ और रसूलुल्लाह स०अ० की शफ़ाअत एक तरफ़ तो यह उसकी सोच की ख़राबी मानी जाएगी। इसलिए कि क़ुरआन की आयतों से पता चलता है कि अल्लाह तआला के दरबार में किसी को मुंह खोलने की भी हिम्मत न होगी कि कोई सिफ़ारिश करे। इसीलिए हदीसों में इस बात को साफ़ कर दिया गया है कि क़यामत के दिन आप स०अ० एक बड़ी तादाद की सिफ़ारिश नहीं करेंगे, उनमें ऐसे लोग होंगे जिनमें किसी ने किसी का हक़ मारा होगा, किसी ने ज़िन्दगी भर शरीअत के ख़िलाफ़ काम किये होंगे, किसी ने क़ुरआन के हुक्म को काफ़ी नहीं समझा होगा, मानो इससे यह बात साफ़ हो गयी है कि आप स०अ० की शिफ़ाअत के मुस्तहिक़ वही लोग होंगे, जो नबी करीम स०अ० से किसी न किसी दर्जे में सच्ची मुहब्बत करने वाले हों, सच्ची मुहब्बत की मांग यह है कि वे जीवन के हर भाग में आप स०अ० की सुन्नतों का ध्यान रखने वाले हों, उनको ज़िन्दा करने वाले हों, और उसके बारे में हर समय फ़िक्र करते रहें, एक हदीस में आता है कि मेरी मुहब्बत का तक़ाज़ा यह है कि मेरी सुन्नतों को ज़िन्दा किया जाए, जो ऐसा करेगा वह मेरे साथ जन्नत में होगा।

अफ़सोस की बात है कि बहुत से लोग शफ़ाअत रसूलुल्लाह स०अ० के इस मतलब को नहीं समझते, जिसमे नतीजे में वे शिर्क में भी पड़ जाते हैं और अपनी कथनी व करनी से इस बात की दावत देते हैं कि चाहे हमारे काम इस्लामी शरीअत के कितने भी ख़िलाफ़ हों, लेकिन नबी से मुहब्बत करने वालों को क़यामत के दिन शफ़ाअत ज़रूर नसीब होगी, जबकि हदीसों में यह बात साफ़ है कि सच्ची मुहब्बत की सबसे पहली मांग यह है कि रसूलुल्लाह स०अ० की सुन्नतों की सच्ची पैरवी हो।

अल्लाह का ज़िक्र

हज़रत फ़ातिमा रज़ि० घर का काम करती थीं, ख़ुद चक्की पीसती थीं। उससे हाथों में गट्टे पड़ गये थे और ख़ुद ही मश्क भर कर लाती थीं, ख़ुद झाड़ू देती थीं। एक बार आप (स०अ०) की ख़िदमत में कुछ लौंडी गुलाम आये हज़रत अली रज़ि० ने हज़रत फ़ातिमा रज़ि० से कहा तुम अपने वालिद की ख़िदमत में जाकर एक ख़ादिम मांग लाओ ताकि सहूलत रहे। वो हुज़ूर पाक (स०अ०) की ख़िदमत में गयीं देखा कि भीड़ लगी हुई है, इसलिये वापिस आ गयीं। दूसरे दिन हुज़ूर ख़ुद तशरीफ़ लाये और पूछा कि कल तुम किस काम को गयीं थीं। हज़रत फ़ातिमा रज़ि० तो शर्म की वजह से चुप रहीं, हज़रत अली रज़ि० ने कहा, हुज़ूर! चक्की पीसते–पीसते हाथों में निशान पड़ गये, मश्क भरते–भरते सीने पर दाग़ पड़ गये, झाड़ू देते–देते कपड़े मैले हो गये, कल आपकी ख़िदमत में कुछ लौंड़ी गुलाम आये थे, मैने इनको भेजा था कि कोई गुलाम मांग लाओ, ताकि कामों में आसानी हो।

आप (स०अ०) ने फ़रमाया: फ़ातिमा! अल्लाह से डरती रहो, और उसके फ़राएज़ अदा करती रहो और घर के कारोबार को चलाती रहो और जब सोने के लिये लेटो तो सुब्हानल्लाहि, अल्हम्दुलिल्लाहि, अल्लाहु अकबर तैतींस–तैतींस और चौतिस बार पढ़ लिया करो। ये ख़ादिम से बेहतर है।

हज़रत फ़ातिमा रज़ि० ने अर्ज़ किया, मैं अल्लाह और उसके रसूल (स०अ०) के हुक्म पर राज़ी हूं।

आप (स०अ०) अपने घरवालों और रिश्तेदारों को ख़ास करके तस्बीह का हुक्म फ़रमाया करते थे, अज़वाज मुतहरात से इरशाद फ़रमाया करते थे कि जब वो सोने का इरादा करें तो ये तस्बीह पढ़ लिया करें। अल्लाह के ज़िक्र से तो आख़िरत में सवाब मिलेगा ही, इस दुनिया में भी इसके बड़े फ़ायदे हैं सबसे बड़ा फ़ायदा दिन का चैन व क़रार है। जिसकी हर आदमी को ज़रूरत होती है और इस समय ये मफ़क़ूद है, हर शख़्स परेशान, बेचैन और बेकल नज़र आता है और ज़िन्दगी तंग मालूम होती है। इसका कीमिया असर नुस्ख़ा अल्लाह की याद है।

एक बार आप (स०अ०) की ख़िदमत में फ़क़ीर व मुहाजिरीन हाज़िर हुए और अर्ज़ किया:

"या रसूलुल्लाह (स०अ०) मालदार बुलन्द दर्जे ले गये।"

आप (स०अ०) ने पूछा क्यों?वो लोग बोले, नमाज़ों में वो लोग हमारे शरीक हैं, लेकिन मालदार होने की वजह से वो लोग सदक़े करते हैं, गुलाम आज़ाद कर सकते है और हम ये काम नहीं कर सकते है।

आप (स०अ०) ने फ़रमाया मैं तुम्हें ऐसी चीज़ बताता हूं जिस पर अमल करके अपने पहलों और बाद में आने वालों से बढ़ जाओ और कोई शख़्स तुमसे उस वक़्त तक न बढ़ेगा जब तक वो यही अमल न करे। सहाबा ने अर्ज़ किया, ज़रूर बताइये, आप (स०अ०) ने इरशाद फ़रमाया:

"हर नमाज़ के बाद सुब्हानल्लाहि, अल्हम्दुलिल्लाहि, अल्लाहु अकबर तैतींस–तैतींस बार पढ़ लिया करो।"

उन लोगों ने शुरू कर दिया। मालदारों को मालूम हुआ तो उन्होंने भी ये अमल शुरू कर दिया। फ़क़ीर दोबारा हाज़िर हुए और कहा या रसूलुल्लाह (स०अ०) हमारे मालदार भाई भी यही पढ़ने लगे तो आप (स०अ०) ने फ़रमाया कि ये अल्लाह का फ़ज़ल है जिसको चाहे अता करे।

मौलाना मुहम्मद सानी हसनी रह०

R.N.I. No.
UPHIN/2009/30527

Monthly
ARAFAT KIRAN
Raebareli

Postal Reg. No.
RBL/NP - 10

Issue: 12 | DECEMBER 2016 | VOLUME: 08

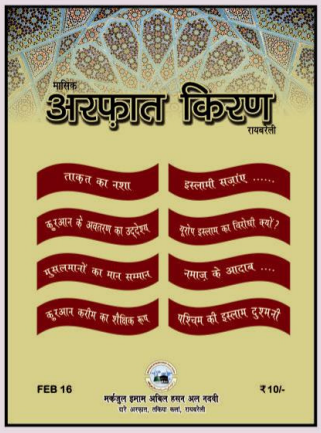

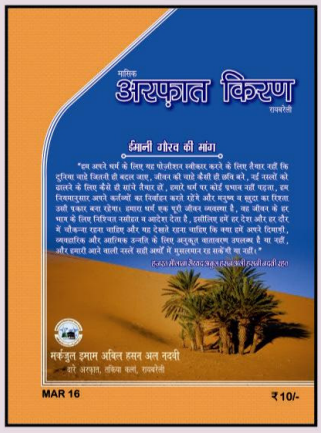

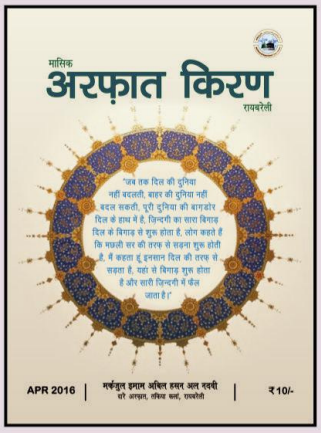

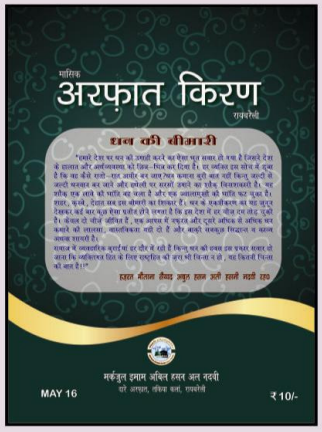

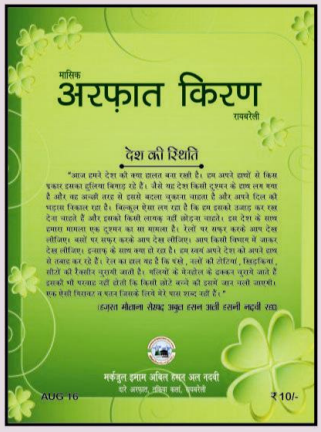

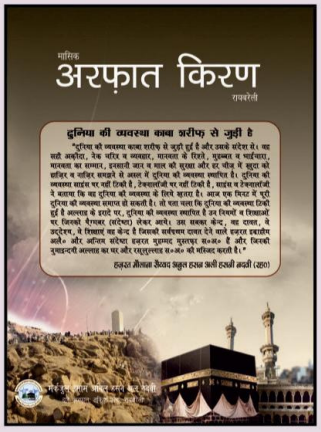

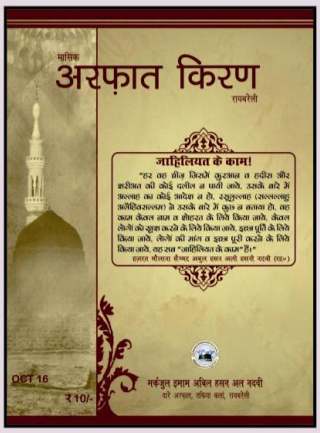

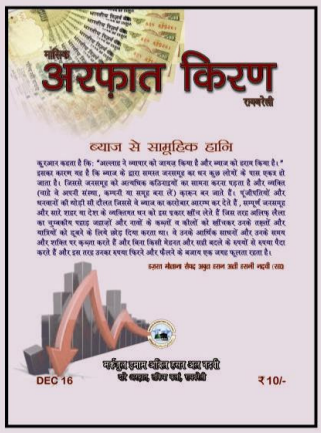

Editor: Bilal Abdul Hai Hasani Nadwi
MARKAZUL IMAM ABIL HASAN AL-NADWI
Dare Arafat, Takiya Kalan, Raebareli, U.P.
Mobile:9792646858
E-Mail: markazulimam@gmail.com
www.abulhasanalinadwi.org

Printed & Published by: Mohammad Hasan Nadwi
On Behalf of: Markazul Imam Abil Hasan Al-Nadwi
Printed at S.A. Offset Printers, Masjid ke peeche,Phatak
Abdullah Khan, Sabzi Mandi, Station Road, Raebareli, U.P.